जुलाई-२०२२ ◆ वर्ष ११ ◆ अंक ०३ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

जुलाई-२०२२

दूजे की पीड़ा को लख के,
जो दयालु हो जाता है।
अभिमान रहित-
वह प्रभुभक्त,
ऋषि-सन्देश हमें
बतलाता है॥

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५ १२६

कामयाबियों भरे 101 साल रहे बेमिसाल

1919·CELEBRATING·2019
1919·शताब्दी उत्सव·2019
100
Years of affinity till infinity
आत्मीयता अनन्त तक

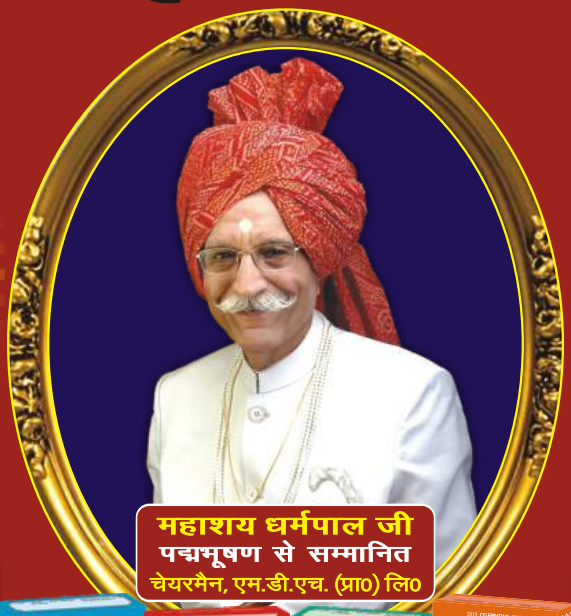

महाशय धर्मपाल जी
पद्मभूषण से सम्मानित
चेयरमैन, एम.डी.एच. (प्रा०) लि०

विश्व प्रसिद्ध एम डी एच मसाले 101 सालों से शुद्धता और गुणवत्ता की कसौटी पर खरे उतरे।

MDH मसालों में 101 साल की शुद्धता के उत्सव पर
अपने सभी ग्राहकों, वितरकों एवं शुभचिन्तकों को हार्दिक बधाई

भारत सरकार ने व्यापार और उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण (Trade & Industry, Food Processing) में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए महाशय जी को पद्मभूषण सम्मान से अलंकृत किया गया।

भारत सरकार द्वारा "ITID Quality Excellence Award" से सम्मानित किया गया।
यूरोप में मसालों की शुद्धता के लिए "Arch of Europe" प्रदान किया गया।
"Reader Digest Most Trusted Brand Platinum Award" भी प्रदान किया गया।
The Brand Trust Report ने वर्ष 2013 से 2020 तक लगातार 6 वर्षों के लिए ब्रांड एमडीएच को India's Most Trusted Masala Brand & India's Most Attractive Brands का स्थान दिया है।

MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच–सच

महाशय धर्मपाल जी ने सियालकोट (पाकिस्तान) से आकर कठिन परिस्थितियों और संघर्ष से अपने जीवन को संवारा है और बड़े पैमाने पर समाज और मानव जाति की सेवा के लिये अपने व्यवसाय को समर्पित किया है। अधिक जानने के लिये YouTube Channel पर Mahashay Dharampal Gulati टाईप करें और देखें।

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

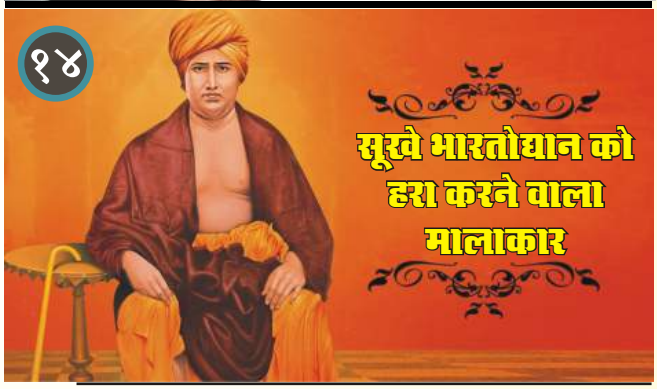

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२२
आषाढ शुक्ल अष्टमी
विक्रम संवत्
२०७९
दयानन्दाब्द
१९८

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

July - 2022

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

समाचार २८

हलचल २९

०४ वेद सुधा
०६ सत्यार्थ मित्र बनें
१० सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०४/२२
११ सत्य सनातन ईश्वर का ज्ञान .....
१६ गुरु की भी गलत बात मानने .....
१९ कुछ तो सब्र करो
२१ ईसाई मिशनरी और भारत
२३ कॉरपोरेट जगत् में घुसपैठ ....
२६ स्वास्थ्य- गर्मी में रहेंगे बिल्कुल .....
२७ गुरु जी आपका गुरु कौन था?
३० ईश्वर और ईश्वरकृत पुस्तक......

स्वामी श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ११ अंक -०३

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

साँच को आँच नहीं

सुगः पन्था अनृक्षर आदित्यास ऋतं यते।
नात्रावखादो अस्ति वः।। - ऋग्वेद १/४१/४

आदित्यासः- हे आदित्यो! **अत्र**- इस (ऋतमार्ग) में, **ऋतं यते**- ऋत पर चलनेवाले के लिए, **वः** - तुम्हारा, **पन्थाः सुगः**- मार्ग सुगम (तथा), **अवखादः**- विनाश, हानि, **अनृक्षरः** - कण्टकरहित (होता है)। **न अस्ति**- नहीं है।

व्याख्या

इस मन्त्र में ऋतमार्ग पर चलने के लिए उत्साहित किया गया है। इस मन्त्र में 'आदित्यों' को सम्बोधन करके उनको ऋतमार्ग की सरलता का उपदेश किया गया है।

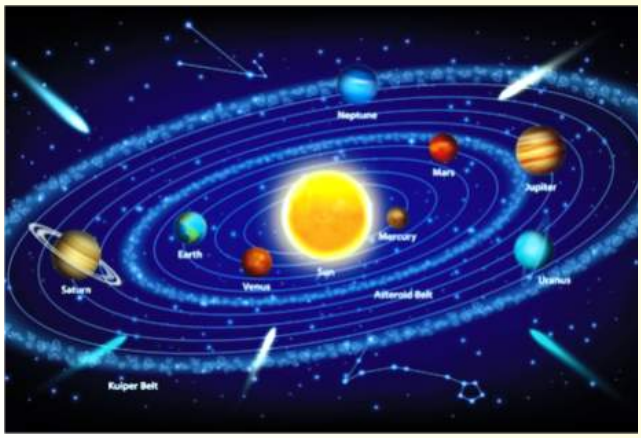

वेद का ऋत शब्द बहुत महत्वपूर्ण है। इसका आशय किसी एक शब्द द्वारा प्रकट करना कठिन है। वेद में अनेक स्थानों पर ऋत के साथ 'सत्य' शब्द का भी प्रयोग हुआ है। ऐसे स्थलों में अथर्व. १२/१/१ को छोड़कर ऋत शब्द सर्वत्र सत्य से पूर्व प्रयुक्त है। ऋत और सत्य का इकट्ठा प्रयोग और ऋत का पूर्व प्रयोग ऋत शब्द के अर्थ समझने में थोड़ी-सी सहायता कर देता है। कम-से-कम इतना तो स्पष्ट है कि 'ऋत' जो कुछ भी है, सत्य का पूर्वगामी है। इस आधार पर कई विद्वानों का विचार है कि सत्य आचरण की वस्तु है और ऋत ज्ञान की, अर्थात् 'ऋत' का ज्ञान किये बिना सत्याचरण असम्भव है। सृष्टि के सारे प्रमुख पदार्थ किसी नियम से बँधे हैं। पहला नियम स्पष्ट दिख रहा है, वह इन सब पदार्थों का परिच्छिन्न होना है। हमारी पृथिवी बहुत बड़ी है, २५००० मील इसकी परिधि है, किन्तु सीमावाली है। सूर्य हमारे सौर ब्रह्माण्ड का अधिनायक-सा है, वह भी सीमित है, चाहे वह पृथिवी से कहीं बड़ा है। दूसरा नियम यह प्रतीत होता है कि ये परिच्छिन्न पदार्थ गतिशील हैं। चन्द्र पृथिवी के चारों ओर घूम रहा है, पृथिवी अपनी धुरी पर घूमती हुई सूर्य के चारों ओर भ्रमण करती है। सूर्य भी गतिमान् है। यजुर्वेद ४०/१ में कहा है-

यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

इस गतिशील संसार में जो-जो कुछ है, गतिशील है।

संसार को यहाँ जगती= निरन्तर गति करनेवाला कहा गया है। गति के साथ देखा जाता है-

गतिमान् का नियम परिधि में गति करना।

इस प्रकार के आलोचन और विवेचन में संसार में विशेष नियम कार्य करते प्रतीत होते हैं। इन नियमों को जानकर अपने-आपको स्वाभाविक नियमों में बाँधने का नाम है ऋत। उसके अनुसार आचरण करना है। वेद में ऋत के अनुसार आचरण करने की कामना की गई है-

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि।। - ऋग्वेद ५/५१/१५

सूर्य और चन्द्र की भाँति हम कल्याणपूर्वक अपने मार्ग पर चलें और ज्ञानपूर्वक किसी को किसी प्रकार हानि न करते हुए, वरन् यथायोग्य दान देते हुए हम संगति (एक चाल) से चलें।

सूर्य-चन्द्र के अनुसार आचरण करना ऋतानुसार आचरण करना है। उसका थोड़ा-सा स्वरूप भी जता दिया है कि दान की भावना हो। सूर्य-चन्द्र भी प्रकाशादि देते हैं। दान के साथ अहिंसा की, लोक-कल्याण की उदात्त कामना हो। यह तभी सम्भव है, जब हमें पूर्णज्ञान हो। यदि हमारी इस चाल का फल संगति है तो हमारा चलना ठीक है, अन्यथा नहीं। सूर्य-चन्द्र आदि अपनी

परिधियों पर चलते हुए एक चाल (संगति) से चलते हैं।

संगति यज्ञ का दूसरा नाम है। वेद कहता है, हे सूर्य का अनुकरण करने से आदित्यरूपधारी ब्रह्मचारियो! ऋतगामी के लिए- सुगः पन्था अनृक्षरः - मार्ग सुगम और निष्कण्टक है।

ऋतगामी जब किसी की हिंसा नहीं करता, किसी का भाग नहीं छीनता, जिसको जो देना चाहिए, वह उसे दे देता है; तब फिर उसके मार्ग में बाधा काहे को आएगी। उसका पथ सचमुच 'अनृक्षर' निष्कण्टक, बाधा रहित ही होगा, अतः वह किसी की हिंसा नहीं करता। इसलिए-

नात्रावखादो अस्ति - इस मार्ग में हानि भी नहीं।

अहिंसा का फल योगदर्शन में कहा है-

अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः। - योग दर्शन २/३५

अहिंसा के परिपक्व अभ्यास से वैर छूट जाते हैं।

वैरी ही बाधा पहुँचाते हैं, जब कोई वैरी न रहा, तब बाधा कैसी? इसलिए ऋतमार्ग पर चलो, निश्चय जानो, इसमें कोई हानि नहीं होगी।

ऋत की महिमा कहते हुए ऋग्वेद में एक स्थान पर कहा है-

ऋतस्य नाभिरमृतं विजायते। - ऋग्वेद

ऋत का केन्द्र अमृत हो जाता है।

ऋत= सृष्टिनियम के उल्लंघन से मनुष्य मृत्यु का शिकार होता है। इसके विपरीत ऋत का आचारी अमृत= जीवनाधार बन जाता है।

रोग-शोकादि- ये सब मृत्यु के विविधरूप हैं। ऋतविरोधी रोग-शोक में ग्रस्त और अतएव त्रस्त रहता है। मनुष्य का स्वभाव कुछ ऐसा है कि वह ऋत के उल्लंघन करने में अपनी वीरता तथा शान समझता है। शायद इसी भाव को मन में रखकर महर्षि याज्ञवल्क्य ने शतपथ ब्राह्मण में 'अनृतं मनुष्याः' = 'मनुष्य ऋत के विरुद्ध चलता है', कहा है, किन्तु इसका परिणाम अच्छा नहीं होता। वेदादि सत्यशास्त्रों में सर्वत्र अनृतत्याग पर बहुत बल दिया है।

मनुष्य बहुधा भय के मारे अनृत का अवलम्बन करता है। यदि मनुष्य को विश्वास हो जाए कि ऋत-व्यवहार से उसकी हानि न होगी तो वह उस अनृत-व्यवहार में प्रवृत ही न हो। इस मन्त्र में मनुष्य को विश्वास दिलाया गया है कि-

ऋतं यते। नात्रावखादः।

ऋत का अनुसरण करनेवाले को यहाँ भी कोई हानि नहीं, अर्थात् वेद डंके की चोट से कह रहा है कि ऋत का अनुसरण करो, अनृत त्यागो।

इस मन्त्र में 'आदित्य' पद बहुत महत्वपूर्ण है। आदित्य का अर्थ है अखण्डित व्रतवाला। सफलता प्राप्त करने के लिए, अपने लक्ष्य के लिए जब तक अविचल भावना से कार्य न किया जाएगा, तब तक लक्ष्य-सिद्धि की कल्पना भी नहीं की जा सकती। 'श्रेयांसि बहुविघ्नानि' - कल्याणमार्ग में विघ्न बहुत होते हैं। जो मनुष्य विघ्न-बाधाओं से घबराकर अपने कार्य को बीच में छोड़ देता है, वह आदित्य नहीं कहला सकता, क्योंकि उसने अपना संकल्प, व्रत तोड़ दिया है। 'कार्यं वा साधयामि शरीरं वा पातयामि' - या मैं अपने कार्य को सिद्ध करूँगा, अन्यथा शरीर त्याग दूँगा। इस प्रकार के दृढ़प्रतिज्ञ, अखण्डनीय सकंल्पवाले मनुष्य आदित्य कहलाते हैं। ऐसों के मार्ग में विघ्न आकर क्या करेंगे? तात्पर्य यह कि ऋत पथ पर चलने से पूर्व आदित्य (अखण्डनीय व्रती) बनना अनिवार्य है।

- जीवन लाल आर्य
अशोक विहार, दिल्ली

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत हूँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक– अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण :

AC. No. : 310102010041518,
IFSC CODE- UBIN 0531014,
MICR CODE- 313026001
में जमा करा कृपया सूचित करें।

जिन महानुभावों ने हमारे एक आग्रह पर न्यास को सम्बल प्रदान करने हेतु 5100 रु. (इक्कावन सौ) प्रतिवर्ष देकर सत्यार्थ मित्र बनना स्वीकार किया उनके चित्र को यहाँ हृदय से धन्यवाद प्रेषित करते हुए दे रहे हैं। बाकी साथियों के चित्र अगले अंक में दिए जायेंगे।

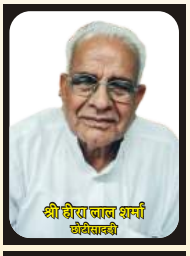

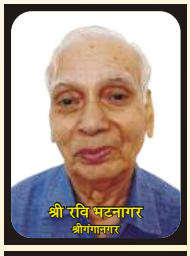

आत्म निवेदन

हनुमान चालीसा और राजद्रोह

राजद्रोह कानून की चर्चा और इसकी आलोचना स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् अनेकों अवसर पर हुयी है। इसके दुरुपयोग के सैकड़ों उदाहरण गिनाये जा सकते हैं। परन्तु हाल ही में निर्दलीय विधायक नवनीत राणा और उनके पति रवि राणा पर लगाए गए राजद्रोह के मुकदमे ने चौंका दिया है। धारा 124 A के दुरुपयोग का इससे बेहतर उदाहरण शायद ही कोई होगा। मुम्बई पुलिस ने पिछले दिनों सांसद नवनीत राणा और उनके पति को कथित रूप से 'विभिन्न समूहों के बीच शत्रुता पैदा करने' के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। राणा दम्पति ने सीएम उद्धव ठाकरे के निजी आवास 'मातोश्री' के बाहर हनुमान चालीसा का पाठ करने की घोषणा की थी। बाद में उन्होंने अपना कार्यक्रम रद्द भी कर दिया। हालांकि उनकी घोषणा से शिवसेना समर्थक आक्रोशित हो गए थे। इसे माहौल खराब करने की कोशिश माना गया। उनके खिलाफ भारतीय दण्ड संहिता की धारा 124-A (राजद्रोह) के तहत आरोप लगे और बताया गया कि उन्होंने सरकारी तंत्र को चुनौती दी थी और मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के खिलाफ टिप्पणियाँ की थीं।

भारत की स्वतंत्रता के साथ ही राजद्रोह कानून को लेकर चर्चा प्रारम्भ हो गयी थी। संविधान सभा में भी इसका विरोध हुआ था। जो कानून स्वतंत्रता सैनानियों को दबाने के लिए, उनकी आवाज को कुचलने के लिए बनाया गया था आखिर उसका स्वतन्त्र भारत में वह भी लोकतांत्रिक भारत में क्या काम? अंग्रेजों के शासन के समय में देश में पहली बार साल १८९१ में

बंगाल के एक पत्रकार जोगेन्द्र चन्द्र बोस पर राजद्रोह लगाया गया था। वो ब्रिटिश सरकार की आर्थिक नीतियों और बाल विवाह के खिलाफ बनाए गए कानून का विरोध कर रहे थे। अतः तर्क दिया जाता है कि जिस कानून का प्रयोग तिलक और गाँधी के खिलाफ हुआ था वह स्वतन्त्र भारत में क्यों जिन्दा रहे?

ब्रिटिश शासन में वर्ष १८७० में राजद्रोह कानून को बनाया गया था। इस कानून को अंग्रेजी हुकूमत के एक एडवोकेट जेम्स स्टीफन ने लिखा था। जेम्स स्टीफन का मानना था कि किसी भी सूरत में सरकार की आलोचना को बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। इस कानून का इस्तेमाल अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ बगावत करने और विरोध करने वाले लोगों पर किया जाता था। तब इस कानून के तहत कई लोगों को उम्रकैद की सजा दी गई थी।भारत की स्वतंत्रता के कट्टर समर्थक बाल गंगाधर तिलक पर दो बार राजद्रोह का आरोप लगाया गया था। सर्वप्रथम वर्ष १८९७ में जब उनके एक भाषण ने कथित तौर पर अन्य लोगों को हिंसक व्यवहार के लिए उकसाया और जिसके परिणामस्वरूप दो ब्रिटिश अधिकारियों की मौत हो गई। इसके बाद वर्ष १९०९ में जब उन्होंने अपने अखबार केसरी में एक सरकार विरोधी लेख लिखा।

संविधान सभा में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर जब उचित प्रतिबन्धों पर बहस चल रही थी तो के.एम. मुंशी ने

इनके अन्तर्गत देशद्रोह को लेकर आपत्ति की थी। उसका कारण था देशद्रोह शब्द की द्वयर्थक प्रकृति।
के.एम. मुंशी के अनुसार यदि इस शब्द को संविधान के प्रारूप से नहीं हटाया गया तो एक गलत धारणा बनेगी कि हम IPC के 124A को कायम रखना चाहते हैं।
जैसा कि बेहद स्पष्ट है, इस कानून का उपयोग हमेशा असहमति पर नियंत्रण के रूप में किया जाना था ताकि सरकार के विरुद्ध किसी भी प्रकार के विरोध का दमन किया जा सके।
मुंशीजी का संशोधन पारित हो गया। अंगीकृत संविधान देशद्रोह के आधार पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रतिबन्ध की अनुमति नहीं देता है। परन्तु IPC में 124A बनी रही।
अब स्वतंत्रता के ७५ वर्ष होने जा रहे हैं इस मध्य कितनी सरकारें आयीं और गयीं परन्तु किसी ने भी इस धारा को नहीं

हटाया। कारण अपने-अपने विरोधियों के विरुद्ध एक शस्त्र के रूप में सभी ने इसका उपयोग किया। जो राजनीतिक दल विपक्ष में रहा उसने इसकी आलोचना की और जब वे ही सत्ता में आये तो उन्होंने अपने विरोधियों की आवाज कुचलने में इसका प्रयोग किया।
न्यायालय में भी इसकी व्याख्या के अनेक अवसर आये। इस प्रावधान की सबसे बड़ी परीक्षा केदारनाथ मामले में हुयी। बिहार के रहने वाले केदारनाथ सिंह पर १९६२ में राज्य सरकार ने एक भाषण को लेकर देशद्रोह का मामला दर्ज कर लिया था। लेकिन इस पर हाईकोर्ट ने रोक लगा दी थी। केदारनाथ सिंह के मामले में सुप्रीम कोर्ट की पाँच जजों के संविधान पीठ ने भी अपने आदेश में कहा था कि देशद्रोही भाषणों और अभिव्यक्ति को सिर्फ तभी दण्डित किया जा सकता है, जब उसकी वजह से किसी तरह की हिंसा या असंतोष या फिर सामाजिक असंतुष्टिकरण बढ़े।
केदारनाथ बनाम बिहार राज्य केस में सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि सरकार की आलोचना या फिर प्रशासन पर टिप्पणी करने भर से देशद्रोह का मुकदमा नहीं बनता। देशद्रोह कानून का इस्तेमाल तब ही हो जब सीधे तौर पर हिंसा भड़काने का मामला हो।
केदारनाथ सिंह मामले में सुप्रीम कोर्ट ने देशद्रोह कानून की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखा था। लेकिन इसके दुरुपयोग के दायरे को सीमित करने का प्रयास किया। अदालत ने माना था कि जब तक हिंसा के लिए उकसाने या हिंसा का आह्वान नहीं किया जाता, सरकार देशद्रोह का मामला दर्ज नहीं कर सकती। केदारनाथ फैसले ने उन स्थितियों को कम कर दिया था जिनमें राजद्रोह का इस्तेमाल किया जा सकता है। लेकिन अब भी यह आरोप लगाए जाते है कि कानून का दुरुपयोग किया जा रहा है। नवनीत राणा के मामले को तथा कंगना रानौत के मामले को देखें तो यह आरोप सही प्रतीत होता हैं।
भारतीय दण्ड संहिता की धारा 124 (A) के अनुसार, 'बोले या लिखे गए शब्दों या संकेतों द्वारा या दृश्य प्रस्तुति द्वारा, जो कोई भी भारत में विधि द्वारा स्थापित सरकार के प्रति घृणा या अवमानना पैदा करेगा या पैदा करने का प्रयत्न करेगा, असंतोष (Dis affection) उत्पन्न करेगा या करने का प्रयत्न करेगा, वह आजीवन कारावास या तीन वर्ष तक की कैद और जुर्माना अथवा सभी से दंडित किया जाएगा।'
यहाँ विचारणीय यह भी होना चाहिए कि राजद्रोह तथा देशद्रोह में भी कोई अन्तर होना चाहिए?किसी सरकार की आलोचना करना उसकी नीतियों के विरुद्ध अपनी बात रखना, विरोध प्रदर्शित करना और देश के प्रति घृणा फैलाना अथवा असम्मान के भाव प्रकट करना और विस्तृत करना एक कैसे हो सकते हैं?
इस सन्दर्भ में एक विचारक का कहना है कि संवैधानिक नियमों के तहत राजद्रोह-देशद्रोह के मामलों में एक ही धारा लागू होती है। ऐसे सभी मामले धारा-124A के तहत विचाराधीन होते है। सामान्य अर्थों में राजद्रोह का आशय विधि द्वारा स्थापित सरकार, नीति तथा प्रशासनिक अधिकारियों के विरुद्ध असंतोष की भावना फैलाने से है। जबकि देशद्रोह राष्ट्र के प्रति असम्मान, राष्ट्र की एकता-अखण्डता के विरुद्ध किया गया कार्य तथा राष्ट्रीय संस्कृति और विरासत को पूर्णतया नकारना है। अतः राजद्रोह शासन के खिलाफ किया गया आचरण है, जबकि देशद्रोह राष्ट्र के खिलाफ।
पत्रकार विनोद दुआ पर हिमाचल के शिमला में राजद्रोह के मामले में एफआईआर दर्ज हुई थी। विनोद दुआ ने अपने ऊपर दर्ज एफआईआर को रद्द करने की माँग भी की थी। साथ ही पत्रकारों के खिलाफ दर्ज राजद्रोह के मामले के खिलाफ जाँच के

लिए एक कमेटी बनाने की भी अपील की थी। सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में विनोद दुआ पर दर्ज एफआईआर को निरस्त कर दिया। कोर्ट ने १९६२ के केदारनाथ बनाम बिहार राज्य केस का हवाला देकर दुआ को दोषमुक्त किया। लेकिन इसके साथ ही कमेटी बनाने वाली उनकी दूसरी याचिका को खारिज कर दिया। कोर्ट ने कहा ये विधायिका क्षेत्र पर अतिक्रमण की तरह होगा। अब हाल ही के एक आदेश के माध्यम से सर्वोच्च न्यायालय ने केन्द्र और राज्यों दोनों स्तर पर सरकारों को निर्देश दिया है कि वे धारा 124A के तहत लगाए गए आरोप से उत्पन्न 'सभी लम्बित परीक्षण, अपील और कार्यवाही' को 'स्थगित' रखें।

देशद्रोह कानून पर विचार करने का निर्देश तब जारी हुआ जब केन्द्र सरकार द्वारा एक हलफनामा दायर कर सर्वोच्च न्यायालय को सूचित किया गया कि उसने कानून की पुनः जाँच करने का फैसला किया है।

खण्डपीठ ने माना कि सरकार द्वारा प्रावधान पर पुनर्विचार करने की पेशकश कम से कम यह दर्शाती है कि सरकार इस मामले पर न्यायालय की प्रथम दृष्टया राय के साथ व्यापक रूप से सहमत है कि यह खण्ड 'वर्तमान सामाजिक परिवेश के अनुरूप नहीं है और उस समय के लिये अभिप्रेत था जब देश औपनिवेशिक शासन के अधीन था।'

एस.जी. वोम्बटकेरे बनाम भारत संघ मामले में में दिये गए एक संक्षिप्त आदेश में सर्वोच्च न्यायालय की तीन-न्यायाधीशों की खंडपीठ ने भारतीय दण्ड संहिता (IPC) की धारा 124A के कार्यान्वयन को प्रभावी ढंग से निलम्बित कर दिया। देशद्रोह (Sedition) को अपराध घोषित करने वाले इस प्रावधान का इस्तेमाल आजादी के बाद के क्रमिक शासनों द्वारा लोकतांत्रिक असंतोष के दमन के लिये किया गया है।

- इससे पूर्व मौखिक सुनवाई के दौरान भारत के मुख्य न्यायाधीश एन.वी. रमना की अध्यक्षता वाली पीठ ने संकेत दिया था कि वह इस कानून को कालदोष या औपनिवेशिक युग के अवशेष के रूप में देखती है।
- अब हाल ही के एक आदेश के माध्यम से सर्वोच्च न्यायालय ने केन्द्र और राज्यों दोनों स्तर पर सरकारों को निर्देश दिया है कि वे धारा 124A के तहत लगाए गए आरोप से उत्पन्न 'सभी लम्बित परीक्षण, अपील और कार्यवाही' को 'स्थगित' रखें।
- इस सन्दर्भ में देशद्रोह कानून (IPC की धारा 124A) की गहराई से जाँच करना और उसके गुण-दोषों को सामने लाना अनिवार्य है।
- अब जबकि सरकार के समक्ष यह अवसर है कि देशद्रोह से सम्बन्धित प्रावधानों पर गम्भीरता से विचार करे तो अत्यन्त उचित होगा कि उन सभी स्थितियों की विषद् व्याख्या की जाय तथा उन्हें परिभाषित कर दिया जाय ताकि इस कानून का अनुचित प्रयोग न हो सके।

विद्वानों का कथन उचित प्रतीत होता है कि देशद्रोह की परिभाषा को संकुचित किया जाना चाहिये, जिसमें केवल भारत की क्षेत्रीय अखण्डता के साथ-साथ देश की सम्प्रभुता से सम्बन्धित मुद्दों को ही शामिल किया जाए।

'देशद्रोह' अत्यन्त सूक्ष्म शब्द है और इसे सावधानी के साथ लागू करने की आवश्यकता है। यह एक तोप की तरह है जिसका उपयोग चूहे को मारने के लिये नहीं किया जाना चाहिये। निश्चय ही शस्त्रागार में तोप भी होने चाहिये लेकिन वे प्रायः निवारक के रूप में हों और कभी-कभी उनका इस्तेमाल गोले दागने के लिये किया जाए।

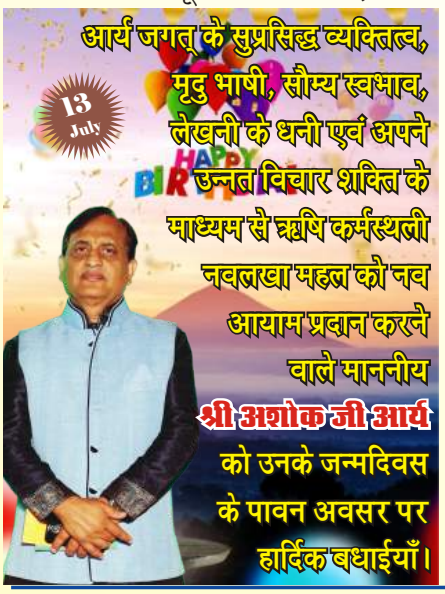

लोकतंत्र की रक्षा के लिये हमें यह सुनिश्चित करना चाहिये कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता की संवैधानिक गारण्टी व्यर्थ न जाए। इसके लिये हमारे प्रत्येक दण्डात्मक कानून को समानता, न्याय और निष्पक्षता की चिन्ता से प्रेरित होना चाहिये।

यद्यपि राजद्रोह कानून को बनाए रखने में कुछ लोगों का ये भी तर्क है कि अगर कोर्ट की अवमानना के लिए किसी के खिलाफ कानूनी प्रक्रिया अपनाते हुए दण्डात्मक कार्यवाही होती है। तो, फिर लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकार की अवमानना पर कानूनी कार्रवाई क्यों नहीं होनी चाहिए। तर्क देने वालों का कहना है कि सरकार पर अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर आलोचना से देश की छवि को भी नुकसान पहुँचता है अतः ये प्रावधान आवश्यक हैं। परन्तु हमें मध्य मार्ग उचित प्रतीत होता है अर्थात् इसके सभी

प्रावधानों की विषद् व्याख्या इस प्रकार की जाय जिससे देश की अखण्डता और संप्रभुता को चोट पहुँचाने का कोई भी प्रयत्न सजा से बचा न सके और मात्र अपनी बात रखना अथवा सरकार की नीतियों का विरोध करने का अधिकार प्रयोग करने वाले सुरक्षित रहें।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

मैं अमर सिंह प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त) गाँव- डोहर खुर्द, जिला- महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) से आज सायंकाल लगभग ५ बजकर ४० मिनट पर इस स्थान नवलखा भवन के दर्शनार्थ पहुँचा। मैं यहाँ देरी से पहुँचा परन्तु लेट होने पर भी यहाँ के कार्यरत सज्जनों का व्यवहार अत्यन्त सुन्दर एवं मृदु रहा। इन्होंने बड़े ही अपनत्व के भावना से सभी चीजें दर्शनीय स्थल बहुत ही शालीनता से मुझे दिखाए। संस्कार विधि के १६ दृश्य, सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ तथा महर्षि जी का जीवन चरित्र बड़े सम्मान व प्रेम से दिखाया व समझाया। यहाँ कार्यरत सभी महानुभाव जिन तीन या चार सज्जनों से मेरा मिलना हुआ अत्यन्त उत्तम रहा। सज्जन महानुभाव श्रीमान् पुरोहित जी, श्री लक्ष्मण जी, श्री विजय जी सभी का व्यवहार अति प्रशंसनीय है। आमजन को ऋषि के बारे में बताने का यह प्रयास न्यास की तरफ से अति उत्तम है। मैं सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ।

आज हम उदयपुर घूमने आये। यहाँ हमने नवलखा महल देखा। हमने यहाँ नवलखा महल के अन्दर आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा जिसमें बहुत ही अच्छे तरीके से हमारे धर्म, हमारी संस्कृति को बताया गया है को देखा। पुरानी कुरीतियों को तोड़ने के स्वामी जी के प्रयासों के बारे में जाना और उन प्रयासों व प्रयत्नों को जानकर हमें भी उनके बताए गए नक्शे कदम पर चलने का प्रयास करना चाहिए ऐसा मन में संकल्प लिया। १६ संस्कारों का प्रदर्शन देखा जो कि हमें अपने धर्मपथ पर चलने का मार्गदर्शन करता है। - खुशबू नागर, चितौड़गढ़

नवलखा महल में पहली बार भारतीय संस्कृति के १६ संस्कारों के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त हुई है तथा हमारी संस्कृति एवं देश के महापुरुषों तथा स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में बहुत अच्छी जानकारी दी गई है। मैं तो यही चाहूँगी की यहाँ प्रत्येक विद्यालय के बच्चे एक बार जरूर आएँ और इस भव्य प्रदर्शनी को अवश्यमेव देखें। - प्रतीक्षा आर. पटेल (शिक्षिका) सिलवासा

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०५/२२

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (एकादश समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	ष्टि १	१	ग	■	२	२ ह	२	न २	२
■	३	३ स	■	४	दा	४	च ४	४	■
■	५ कु	५	५	ग ५	■	६	६ रा	६	■

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. खाने, पीने, पुष्ट होने और सब स्त्रियों के संग यथेष्ट भोग-विलास करने को कौन-सा मार्ग कहते हैं।
२. स्वामीनारायण मत का गुरु कौन था।
३. जब गोसाईं जी पीक उगल देते हैं, उसकी प्रसादी बटती है उस प्रसादी को यह लोग क्या कहते हैं।
४. काठियावाड़ में काठी अर्थात् गढ़ड़े का भूमिया था उसका क्या नाम था।
५. सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार महर्षि दयानन्द ने पुष्टिमार्ग को क्या कहा है।
६. ब्राह्म और प्रार्थना समाज भी किनके समान हैं।

"विस्तृत नियम पृष्ठ १६ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अगस्त २०२२

सत्य सनातन ईश्वर का ज्ञान वेद क्या है?

प्रायः प्रत्येक हिन्दू अपने को सनातनधर्मी कहता है। ये सनातन धर्म क्या है, इसका उद्गम क्या है, इसे सनातन क्यों कहते हैं? इसकी जानकारी बहुत व्यक्तियों को नहीं है। सनातन ज्ञान का स्रोत वेद है। इसलिए उस सनातन ज्ञान वेद के सम्बन्ध में संक्षिप्त परिचय इस लेख के माध्यम से दिया जा रहा है। सनातन धर्म को मानने वाले सनातनधर्मी यदि सनातन धर्म को मानना चाहते हैं तो वेद को समझना और मानना आवश्यक है। क्योंकि वेद ही सनातन ज्ञान है, यही परमपिता परमेश्वर का निष्पक्ष और मानवमात्र के कल्याण का ज्ञान है, संसार का पहला ज्ञान व पहली संस्कृति भी यही है, यही ज्ञान धर्म का आधार है। इन सब कथनों का हमारे विश्वविख्यात विद्वानों, ऋषिमुनियों और धर्मशास्त्रों में पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध हैं।

वैसे बिना प्रमाण के किसी भी विचार को स्वीकार भी नहीं करना चाहिए। परन्तु प्रायः धर्मों में ईश्वर सम्बन्धी विचारधाओं को बिना पर्याप्त प्रमाण के किसी भी मानसिक लगाव या आस्था के कारण मान लिया जाता है। इसलिए आज धर्म के नाम पर अंधविश्वास, अपराध और हिंसा हो रही है। धर्म और ईश्वर के सम्बन्ध में सनातन धर्म के विपरीत कोरी आस्था को ही महत्व देकर उसे मानने से लाभ कम हानि अधिक है।

इसने धर्म और ईश्वर को स्थान और समय के साथ बाँध दिया, अपने-अपने विचारों से उनको जानना व मानना तथा मनवाना प्रारम्भ कर दिया, इससे समाज बँट गया। काश वेदों के सनातन मार्ग को समझकर उसे अपनाते तो सम्पूर्ण विश्व एक सूत्र में बँधा होता। समस्त विश्व में सुख, शान्ति व पारिवारिक वातावरण होता। क्योंकि वेद संसार के सभी प्राणियों के पालक, रक्षक, सबके पिता परमेश्वर का ज्ञान है। ये सृष्टि बनती है फिर प्रलय होकर सब कुछ शून्यवत् हो जाता है, फिर सृष्टि पशु, पक्षी, वन, वृक्ष, मानव का जन्म होता है और पुनः सृष्टिक्रम प्रारम्भ हो जाता है। इसी प्रवाह से सृष्टि बनती, बिगड़ती है और ऐसा ही सब कुछ चलता है। वर्तमान में सृष्टि की आयु शास्त्र व वैज्ञानिक १,९६,०८,५३१२२ वर्ष बताते हैं। इतने वर्ष पूर्व से ही मानव का भी इस पृथिवी पर अस्तित्व है।

इंग्लैण्ड के वैज्ञानिक डॉ. जेम्स जीन्स ने अपनी पुस्तक में (The universe Around Us) यूरेनियम के प्रयोग से इस सृष्टि का समय लगभग २ अरब वर्ष बताया।

'नेशनल रिसर्च कौंसिल वर्ल्ड लाईफ' पृष्ठ १८१ के अनुसार वैज्ञानिक मिस्टर राइसडिलक्स ने बड़े-बड़े वैज्ञानिकों की सभा बुलाई और चार वर्षों के अनुसंधान के पश्चात् यूरेनियम और थोरेनियम धातुओं के आधार पर लगभग २ अरब साल गणना की।

१९६० में जीटर मशीन द्वारा इंग्लैण्ड के वैज्ञानिकों ने सूर्य का तापमान व आयु करीब २ अरब वर्ष बताई।

हमारे पूर्वज ज्ञानी, वैज्ञानिक, श्रेष्ठ, धार्मिक, निष्ठावान, सभ्य मानव थे। जबसे मानव है, तभी से धर्म है। प्राचीन काल में भी धर्म था, सामाजिक व्यवस्था थी, ज्ञान-विज्ञान था। श्रीरामचन्द्र जी के समय वायुयान का उल्लेख मिलता है, युद्ध में हवा, आग, पानी, आँधी से विपक्षी सेना को परास्त करने के कई प्रमाण मिलते हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में आज जो उन्नति है, उसमें शल्य चिकित्सा में प्राचीन ऋषि सुश्रुत का और चिकित्सा में ऋषि चरक, धनवन्तरि का नाम उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त आर्य भट्ट, महर्षि भारद्वाज, महर्षि कणाद, वराहमिहिर, भास्कराचार्य आदि वैज्ञानिकों की शृंखला में मान्य किए गए। स्वास्थ्य, खगोल, भूगर्भ, गणित, आकाश, द्यौलोक, अन्तरिक्ष, ज्योतिष में उनका योगदान ही वर्तमान वैज्ञानिक प्रगति का आधार है। इस युग में वायुयान की खोज राइट बन्धु से ८ वर्ष पूर्व सन् १८९५ में शिवकर बापू तलपदे ने जो आर्य समाज काकड़वाड़ी के सदस्य थे,

उन्होंने वायुयान बनाकर की। जिसका मुम्बई चौपाटी पर परीक्षण किया, वहाँ बड़ोदा राज्य के महाराजा व जस्टिस रानाड़े उपस्थित थे। यह निर्माण वेद में दिए संकेतों के आधार पर ही हुआ था। इससे प्राचीन समय में भी वेद विज्ञान था, इसकी पुष्टि होती है।

वर्तमान युग को वैज्ञानिक युग कहते हैं, इस युग की गणना कुछ सौ वर्षों (अधिकतम ५०० से १०००) से प्रारम्भ होना मानी जा सकती है। जबकि हमारे पूर्वज वैज्ञानिकों की खोज और अनुसंधान तो इसके बहुत पहले से लाखों कराड़ों वर्ष पूर्व के हैं। यहाँ विचार करके यह निश्चय करना होगा कि यह ज्ञान उन्हें किसने दिया? कहाँ से प्राप्त हुआ? जबकि इनके पूर्व किसी अन्य वैज्ञानिक का, किसी मानवीय वैज्ञानिक शास्त्र या पुस्तक का नाम सुनने में नहीं आया, क्योंकि ऐसा कोई था ही नहीं।

अब यहाँ सोचना होगा कि कोई मानवीय ज्ञान उनके समक्ष नहीं था तो कौन-सा व किसका ज्ञान था जिससे उन्होंने यह उपलब्धियाँ प्राप्त कीं। निश्चित ही वह ईश्वरीय ज्ञान ही था जिसे हम सनातन कहते हैं, उसे ही वेद कहते हैं, उसे ही ईश्वरीय ज्ञान कहते हैं।

यह वेद ही संसार की प्रथम संस्कृति और प्रथम ज्ञान था। इस संसार की रचना करने वाला इसकी रक्षा और पालन करने वाला वह परमपिता परमात्मा है। समस्त सृष्टि, भूमि, पशु-पक्षी और तमाम पदार्थों का निर्माण जीवन के लिए आवश्यक सारी वस्तुएँ बनने के पश्चात् मानव का जन्म हुआ। इन सबके बनने के पश्चात् यदि इनका ज्ञान मनुष्य को नहीं होता तो इन फल, फूल, औषधि, भूगर्भ में छिपे अनमोल रत्नों, अन्तरिक्ष और द्युलोक की स्थिति का ज्ञान कैसे होता? इस ज्ञान के बिना मानव जीवन सम्भव नहीं होता। परमात्मा पूर्ण है। सबका रचयिता है, सब सत्य विद्याओं का दाता है, उसे सब कुछ ज्ञात है, क्योंकि वह पूर्ण है। इसलिए उसने अपने समस्त पुत्र-पुत्रियों के लिए सृष्टि के प्रारम्भ से ही जिस ज्ञान को प्रदान किया वह ज्ञान वेद है।

मानवीय व्यवहार, राष्ट्रीय कर्तव्य, राजकीय परामर्श, धर्म, कर्म, अर्थ, मोक्ष सम्बन्धी ज्ञान, शरीर, संगीत, ज्ञान-विज्ञान, संसार में जल, थल, नभ आदि सारा ज्ञान परमात्मा के पास ही हो सकता है। वही ज्ञान परमात्मा ने ऋषियों के माध्यम से वेद के रूप में हमें दिया।

वेद का अर्थ ज्ञान भी है। प्रश्न होगा किसका ज्ञान? किसी मनुष्य के ज्ञान को वेदज्ञान नहीं कहा। यह पूर्ण ज्ञान है। वेद में मानवीय सभी सत्य इच्छाओं की पूर्णता का ज्ञान भरा है इसीलिए कहा- **'सर्वज्ञानमयो हिसः'** वेद ही संसार की पहली संस्कृति है, इसलिए कहा **'सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववाराः'** अर्थात् वेद संसार की प्रथम संस्कृति है।

विदेशी विद्वान्, शिक्षाविद् मैक्समूलर ने संसार की अनेक धर्म पुस्तकों की खोज करने पर संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक ऋग्वेद को बताते हुए कहा- Rig Veda is the oldest book in the library of the world.

वैदिक मान्यता में तीन को सनातन कहा है ईश्वर, जीवात्मा एवं प्रकृति। इस प्रकार परमात्मा सनातन है अर्थात् सदा से है तथा सदा रहेगा, इसलिए उसका ज्ञान वेद भी सनातन है। कहा गया **'सर्वपितृ मनुष्याणां वेदाश्चक्षु सनातनम्'** समस्त पितरों के ज्ञान चक्षु यही सनातन वेद थे। धर्म का मूल भी वेद है कहा गया **'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्'** आचार्य मनु २/१२ में कहते हैं-

वेद स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।

धर्म के लक्षणों में वेद को प्रथम स्थान पर दर्शाया है। सन्त तुलसीदासजी ने भी बिना वेद के धर्म का अस्तित्व नहीं माना।

जेहि विधि चलहि वेद प्रतिकूला।
तेहिं विधि होई धर्म निर्मूला।।

जब तक वेद मार्ग पर चलते थे संसार सुखी था। सन्त जी कहते हैं-

वर्णाश्रम निज-निज धरम निरत वेद पथ लोग,
चलहि सदा पावहिं सुखहिं, न हि भय, सोक न रोग।

परमात्मा के सनातन ज्ञान वेद को छोड़कर मानवीय ज्ञान सम्प्रदाय, मजहब, मत-मतान्तरों का प्रचलन हो गया, तो सन्त तुलसीदास को लिखना पड़ा-

चलहिं कुपथ वेद मग छाड़े।
कपट कलेवर कलम त भाड़े।।

वेद ज्ञान किसी समूह के लिए किसी जाति या सम्प्रदाय के लिए या किसी देश के लिए नहीं है। ये ईश्वरीय ज्ञान परमात्मा की सम्पूर्ण सृष्टि के लिए एक संविधान के रूप में हैं। इसमें प्रत्येक शब्द सभी की कल्याण की भावना में उल्लिखित है।

इसलिए संसार में आज तक इस वेद ज्ञान का कोई विरोध

नहीं हुआ। क्योंकि यह ईश्वरीय, सर्वमान्य ज्ञान है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है, इसलिए उसको प्रमाण मानना चाहिए।

तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यमिति। – वैशेषिक दर्शन

वेद सनातन क्यों है ?

तीन प्रकार की विचारधाराएँ होती हैं, नूतन, पुरातन व सनातन। नूतन जो नया है, पुरातन जो नये से पहले का है और सनातन जो कभी नया नहीं होता, कभी पुराना नहीं होता, सदैव समान रहे, जिसका न आदि है और ना अन्त। जो सदा से था और सदा रहेगा वही सनातन है। सनातन उस समय का बोध कराता है, जो कभी नष्ट नहीं होता, सदा रहता है। रामायण, गीता, कुरान, पुराण, बाईबिल, गुरुग्रन्थ साहब ये सब अभी-अभी के हैं, इनके पहले क्या था? क्या धर्म नहीं था?

जबकि धर्म सदा से था, सदा रहेगा। मानव की पहचान ही धर्म है। धर्म बिना तो उसे मनुष्य ही नहीं माना। कहा गया 'धर्मेणहीना पशुभिः समाना'। आज धर्म के नाम पर सम्प्रदायों को माना जा रहा है। यदि सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी या गीता, रामायण काल को ही धर्म का प्रारम्भ मानें तो क्या इसके पूर्व धर्म नहीं था? जो विचारधाएँ मानवीय विचारों या जीवन पर स्थापित हैं वे मजहब हैं।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्र जी, योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण जी ने अपने गुरुकुल में क्या पढ़ा था?

सनातन संस्कृति के देदीप्यमान नक्षत्र भगवान राम का जीवन भी वेदों के अनुरूप था इस बात को नारद मुनि ने महर्षि वाल्मीकि से कहा-

वेदवेदांगतत्त्वज्ञो धनुर्वेदे च निष्ठितः।
सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः स्मृतिमान्प्रतिभानवान्।

अर्थात् श्रीराम वेद वेदांग के तत्व को धुनर्विद्या सर्वशास्त्र

जानने वाले तथा प्रतिभावान थे। पुनः वाल्मीकि लिखते हैं- 'सर्वे वेदविदः शूराः' अर्थात् चारों भाई वेदों के ज्ञाता व शूरवीर थे। भगवान श्रीकृष्ण जी भी चारों वेदों के ज्ञाता थे, ऐसे एक प्रसंग में भीष्म पितामह ने शिशुपाल को बताते हुए कहा।

वेदवेदांगविज्ञानं बलं चाभ्यधिकं तथा।
नृणां लोके हि कोऽन्योऽस्ति विशिष्टः केशवादृते।।

आचार्य मनु धर्म की किसी भी बात को सही मानने के लिए उसका प्रमाण वेद को बताते हुए कहते हैं।

'धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः।

वेद को श्रुति भी कहते हैं।

ईश्वर की प्राप्ति का आधार ही वेद को बताते हुए भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं। 'वेदैश्च सर्वैरहमेव' – गीता १५/१५

परमात्मा पूर्ण है, सनातन है, सदा से था, सदा रहेगा। इसलिए उसका ज्ञान वेद है, वह भी सनातन है और सदा रहने वाला है, वह कभी पुराना या नष्ट नहीं होता इसलिए कहा 'पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति'।

संसार में धर्म के नाम पर प्रचलित अनेक विचारधाराएँ व्याप्त हैं इसलिए आज धर्म के नाम पर समाज हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, बौद्ध, सिक्ख, पारसी आदि सम्प्रदायों में, मतों में बँट गया है। वास्तव में ये सब मजहब हैं, सम्प्रदाय हैं, मतमतान्तर हैं। पहले ये जाति, सम्प्रदाय नहीं थे, सभी व्यक्तियों का धर्म तो एक ही है।

दुनिया का इकरंग आलम आम था।
पहले एक कौम थी, इंसान जिसका नाम था।

सभी व्यक्तियों का धर्म एक ही है और धर्म जबसे मानव पौने दो अरब वर्ष पूर्व अस्तित्व में आया तब से है। जबकि ये साम्प्रदायिक विचारधाराएँ कुछ सौ वर्षों से प्रारम्भ हुई हैं। ये नूतन या पुरातन हो सकती हैं, सनातन नहीं हो सकती हैं। इसलिए समस्त ज्ञान व धर्म सदा से था और सदा रहेगा। इसलिए उसका स्रोत सनातन ही हो सकता है और वह है वेद। **क्रमशः.....**

– प्रकाश आर्य
महू, जिला- इन्दौर, चलभाष- 09826655117

सूखे भारतोद्यान को हरा करने वाला मालाकार

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय

ज्येष्ठ मास का भयंकर ग्रीष्म समय था। दिनकर की कठोर किरणों से तीक्ष्ण तेज वाली वायु की प्रबलता आनन्द बरसा रही थी। सूक्ष्म जल वाष्पयुक्त, भौम ऊष्मा से तीक्ष्ण मरीचियें मैदानों की हरी घास जला रही थी। घास शुष्कता को प्राप्त हो गई थी। उपवनों की लहलहाती लताएँ कुम्हला गई थीं। वृक्षों की शाखाएँ भी श्रीविहीन हो मुरझा गई थीं। उस ग्रीष्मकाल का चित्र कितना भयावह होगा एक साहित्यिक चतुर चितेरे के उदाहरण से अनुमानित कीजिए-

महाराज जयसिंह के दरबार में एक चितेरा ऐसा चित्र बनाकर लाया जिसमें एक सर्प मयूर पुच्छ में प्रवेश कर रहा था और एक हिरण शेर की छाया में बैठकर धूप से बचना

चाहता था। चित्रकार ने राजसभा के सदस्यों से प्रश्न किया कि कोई साहस करके बताए कि मैंने यह किस समय का चित्र खींचा है। सबके मौन रहने पर महाराज जयसिंह के संकेत पर बिहारी ने एक दोहा पढ़ा-दोहा इस प्रकार है-

कहलाने एकत वसत अहिमयूर मृगबाघ।
जगत् तपोवन सो कियो दीरघ दाघ निदाघ।।

इन दोहों को सबके सामने पढ़कर कहा कि यह चित्र भयंकर ग्रीष्मऋतु का वर्णन कर रहा है। सर्प ग्रीष्म से व्याकुल होकर मोर की हरी-हरी पूंछ को घास समझ उसकी ठंडक में शान्ति प्राप्त करना चाहता है और हिरण को भी सिंह शरीर की छाया दिख रही है। यह उसके घातक शत्रु की छाया है, यह ध्यान ही नहीं है। अतः इस भयंकर ग्रीष्म ने प्राणियों के जन्मजात वैरभाव को मिटाकर संसार को तपोवन सा बना दिया है।

अस्तु। इस भयंकर ग्रीष्म के चित्र के बाद यह कहना है कि ऐसे ग्रीष्म में आग बरसाती लू की चिन्ता किए बिना माली अपने उद्यान की घास, फूस, पत्ती, लता और पौधों की रक्षा में चिन्तित बगीचे में प्रवेश करता है। बगीचे की हालत देखकर सोचता है कि इसको किस यत्न से संरक्षित किया जाए। सोच में निमग्न हुआ विचार कर निर्णय लेता है कि घड़े से पानी लाकर इनको सींचकर बचाया जावे। एतदर्थ वह माली अपने कंधे पर पानी का घड़ा उठाकर लाता है और गर्मी से प्यासे, सूखे से मुरझाए हुए पौधों की जड़ों में उस घड़े के पानी को उड़ेल देता है। माली के अत्यन्त श्रमयुक्त पुरुषार्थ के परिणामस्वरूप पौधों की हरियाली लौट आती है। माली इस सूखे बगीचे की हरियाली में अपने सन्तोष की दुनिया बसा लेता है। इस खींचातानी और उधेड़बुन में माली उद्यान की रक्षा करता हुआ अन्ततः पावस (वर्षा) के प्रभात में पहुँच जाता है।

आकाश में मेघासन्न घटाएँ घुमड़-घुमड़ कर जल अपनी वर्षा से जलथल एक कर देती हैं। वर्षा की रिमझिम से प्रफुल्लित माली के मन का चित्र कोई कवि क्या खींच सकता है?

माली बड़ी उत्सुकतामयी कल्पना से अपने उस प्यारे उद्यान की शोभा निरखने पहुँचा कि सभी लताएँ पुष्प आदि मुझे देखकर अत्यन्त प्रसन्न होंगे, उस भयंकर ग्रीष्म के समय के मेरे उपकारों को यादकर कृतज्ञतावश नतमस्तक होंगे। किन्तु संसार में कितने हैं जो किसी के उपकार को स्मरण रखते हैं? अपने चारों ओर सुलभ जलराशि को देखकर पौधों ने कन्धे पर लाकर एक एक घड़ा सींचने वाले माली को उपेक्षा की दृष्टि से देखा। माली के मानसिक आघात से दुःखित भाव को देखकर एक अनुभवी बूढ़े वृक्ष ने माली को सम्बोधित करके

कहा-

तोमैरल्पैरपि करुणया भीम भानौ निदाघे,
मालाकार व्यरचि भवता या तरोरस्य पुष्टि:।
सा किं शक्या जनयितुमिह प्रावृषण्येन वारां,
धारासारानपि विकिरता विश्वतो वारिदेन॥

(संस्कृत के अन्तिम और अद्वितीय कवि पण्डितराज जागन्नाथ)

हे मालाकार! ग्रीष्म के उस भीम=भयंकर आग बरसाने वाले सूर्य के संतापकारक काल में तुम हमारी दीन दशा पर अपनी करुणा अर्थात् द्रवित होकर घड़े से थोड़े-थोड़े जलों को लाकर हम निर्जीवों को जीवन देकर रक्षा न करते, तो अनन्त जलराशि उड़ेलने वाली मेघ घटाएँ हमें जीवन न दे पातीं। क्योंकि उस समय तुम हमें न बचाते तो इस सुहावने समय को देखने के लिए हममें से कौन जीवित होता?

ठीक यही बात अनेकों प्रकार के क्लेश, ताप, दुःख, विधवाओं की करुण पुकार, आपस की फूट मत-मतान्तरों एवं सहस्रों वर्षों की दासता रूपी भीम भानु की निदाघ से निष्प्राण मरणासन्न सूखे भारतोद्यान के विषय में कही जा सकती है जिसको ऋषिवर दयानन्द जैसे माली ने अपने अदम्य साहस, अद्भुत दूरदर्शिता और उपचार चातुर्य से अपने प्राणों से सींचकर जो जीवन दिया है उस पर करोड़ों व्यक्तियों के बलिदान निछावर किए जा सकते हैं। यदि ऋषिवर उस समय न सम्हालते तो आज के स्वाधीन भारत को देखने के लिए हम में से कौन बचता?

ऋषि की इस करुणामयी कृतज्ञता से उपकृत हुआ जाता, बजाय इसके आर्य समाज के नेताओं ने अपने मूर्खतापूर्ण दुराचरण से ऋषि के आर्य समाज रूपी बगीचे को सर्वथा सुखा दिया। सम्वत् २०४० दीपावलि के दिन आशा भरी आँखों से आर्यजनों को निहारते हुए सदैव के लिए आँखें बंद किए ऋषिवर को इतने वर्ष हो गए। इतने वर्षों में इन आर्यों ने क्या किया?

कह सकते हैं कि हमने हजारों आर्य समाज मन्दिर बनवाए, हजारों स्कूल, अनाथालय, धमार्थ औषधालय बनाये। अनेक महासम्मेलन किए। पर यह बताओ कि यह सब साधन है या साध्य? मिला क्या? ऋषि के समय भारत की जो स्थिति थी उससे इस समय क्या वैसी ही है या गिरी है?

जितने मतमतान्तर थे क्या उससे कम हुए हैं या बढ़े हैं? मुसलमान ऋषि के समय में जितने थे उससे कम हैं या अधिक हैं? ईसाई कम हुए या अधिक? भगवान् अधिक हुए या कम? सम्प्रदाय पाखण्ड कुछ नष्ट हुए या और नए पैदा हुए?

यदि सब बढ़े तो तुम क्या करते रहे? तुम नहीं बताओगे तो हम ही बता दे रहे हैं कि तुम क्या करते रहे? तुम केवल नेतागिरी करते रहे। अपने फोटो खिंचवाते रहे। अभिनन्दन करवाते रहे और अभिनन्दन ग्रन्थ तैयार करवाते रहे। भयंकर रूप से लड़ने की सौगात बिछाकर लड़ते रहे। स्वाध्यायहीन ही बने रहे। विद्वानों का सदा अपमान किया। परिणाम यह रहा कि विद्वानों के वंश के वंश नष्ट हो गए। पण्डितों की वंश परम्पराएँ समाप्त हो गईं। परिणाम यह हो गया कि अब दुनिया में जो कहीं कुछ न कर सके किसी लायक नहीं, शास्त्रविहीन गैर पढ़ा लिखा हो वह मात्र आर्य समाज के मंच की शोभा होता है और ये आर्य समाजी श्रोता उसे महाविद्वान् घोषित कर पूजते हैं।

यादव आपस में लड़कर मर गए। तुम सब भी मरोगे। यादवों में केवल तीन बचे थे- कृष्ण, बलराम और सात्यकि। तुम्हारे यहाँ भी तीन ही बचेंगे- बिल्डिंग, बैंक बैलेन्स और आर्य समाज का विधान।

अन्य मतों में जिनको वे लोग धर्म कहते हैं उसका संचालन वही करता है जो उनमें सबसे बड़ा विद्वान् होता है। जैनाचार्य जैन मत का, बौद्धाचार्य बौद्ध मत का, कुरान का विद्वान् इस्लाम का, बाइबिल का विद्वान् ईसायत का संचालक होता है। पर आर्य समाज के स्थानीय इकाई संगठन से लेकर अन्तिम संगठन प्रतिनिधि सभाओं का संचालन उनके हाथों में है जो न संस्कृत के विद्वान् हैं और न वेदों के पण्डित और न शास्त्रों के ज्ञाता, न ही वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ। फिर यह नैया कैसे पार होगी?

जो कार्य होने चाहिए थे वे हुए ही नहीं- जैसे पाखण्ड-खण्डन, वेदों के भाष्य का नाना देशों की भाषाओं में अनुवाद, सच्चे निराकार ईश्वर की उपासना का प्रचार, शास्त्रार्थ, सही वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार, वेद तथा वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध लिखे गए ग्रन्थों और विचारों का उत्तर देना-इत्यादि।

पहिली पीढ़ी के लोग अपना सर्वस्व निछावर करके आर्य समाज को बनाने वाले थे। अब आर्य समाज का नाश कर आर्य समाज से अपने को बनाने वाले हैं। ऋषि ने सूखे भारतोद्यान को सींचकर जो हरा भरा किया था उसे कृतघ्नियों ने सुखा दिया। ऋषि के करुणा भरे द्रवित हृदय से किए उपकार को कोई याद करने वाला नहीं है। आगे कुछ भी नहीं नजर आता है। इति।

- २४३, अरावली अपार्टमेन्ट
अलखनन्दा, नई दिल्ली

गुरु की भी गलत बात मानने का कोई औचित्य नहीं

हर व्यक्ति के जीवन में गुरु का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। इसीलिए गुरु के महत्त्व पर बहुत कुछ लिखा गया है। एक पत्रिका में एक दोहा पढ़ रहा था,

'उलटे सुलटे बचन के सीस ना मानै दुख,
कहै कबीर संसार में सो कहिए गुरु मुख।'

इस का अर्थ भी दिया गया था। लिखा था कि गुरु के सही या गलत किसी भी प्रकार के कथन से जो शिष्य कभी दुखी नहीं होता वही शिष्य सच्चा गुरु सम्मुखी कहलाता है। अर्थात् जो गुरु के प्रति श्रद्धावान और आज्ञाकारी हो वही सच्चा शिष्य होता है। इस दोहे और अर्थ को कई बार पढ़ा। ये दोहा पहले कभी भी कहीं पढ़ने में नहीं आया। दूसरे इस दोहे के अर्थ अथवा संदेश की स्वीकार्यता को लेकर भी बहुत उलझन हुई। इस दोहे के अनुसार गुरु जो कहे उसको बिना तर्क-वितर्क अथवा सही-गलत का आंकलन किए स्वीकार कर लेना चाहिए। आज के दौर में गुरु की गलत बात को हर हाल में मानने की बात कहना ही बड़ा विचित्र लगता है क्योंकि आज की शिक्षा तर्कपूर्ण चिन्तन पर बल देती है।

शिष्य आज्ञाकारी हो, श्रद्धावान हो व निरर्थक तर्क-वितर्क न करे ये बात तो सबको ही माननी चाहिए लेकिन उलटे सुलटे बचन अर्थात् गलत-सही जो भी गुरु कहे उस सभी को शिरोधार्य करने का कोई औचित्य नजर नहीं आता। कबीर की रचनाओं की थोड़ी-बहुत जानकारी के आधार पर मेरा तो यही विचार बनता है कि कबीर ऐसी बेतुकी बात कभी नहीं कह सकते। कबीर ने तो लोगों को आडंबर रहित जीवन जीने और सत्य का अन्वेषण करने का ही संदेश दिया है। जो व्यक्ति आडंबर त्यागने और सत्य का अन्वेषण करने की बात करता हो वो गलत बात को आँखें मूँद कर मानने की सलाह कभी नहीं दे सकता। हाँ अगर सच्चाई कटु हो तो उसे स्वीकार करने में कष्ट होने पर भी उसे स्वीकार करना व्यक्ति के हित में ही होगा लेकिन गलत-सही हर बात को स्वीकार करना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता।

गुरु की गलत-सही हर बात को स्वीकार कर लेना चाहिए

इस सन्दर्भ में गुरु की पात्रता पर भी विचार कर लेना अनिवार्य प्रतीत होता है। गुरु कौन होता है? उसका क्या महत्त्व है? वो हमारे लिए क्या करता है? गुरु वह है जो हमें ज्ञान देता है, गलत मार्ग से सही मार्ग पर अग्रसर करता है अथवा अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। वह सही और गलत में अंतर्भेद करना सिखाता है। वह सही को अपनाने और गलत को त्यागने की शिक्षा और प्रेरणा प्रदान करता है। यदि कोई व्यक्ति इन योग्यताओं पर खुद ही खरा

नहीं उतरता तो वो कैसा गुरु? जिस व्यक्ति का दायित्व ही यह सिखलाने व अपनाने का प्रशिक्षण देना है कि गलत बात को स्वीकार नहीं करना है यदि वही ये कहे या कहलवाए कि गुरु की हर सही-गलत बात माननी है तो वो गुरु होने की पात्रता ही कहाँ रखता है?

अब देखते हैं कि कौन वह व्यक्ति है जो गुरु बनने या होने की पात्रता रखता है। कौन है जो गुरु की वास्तविक भूमिका का निर्वाह कर सकता है? यदि हम ध्यानपूर्वक देखें तो पाते हैं कि कोई भी व्यक्ति, घटना अथवा स्थिति इसे सम्पन्न करने में सक्षम है। घटनाओं अथवा दुर्घटनाओं से हम जितना सीखते हैं इनके अभाव में हम सीख ही नहीं सकते। समस्याएँ भी हमें सिखाती हैं। हमारी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती हैं। वास्तव में ये सम्पूर्ण प्रकृति, हमारे जीवन की सभी घटनाएँ व प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में हमारे सम्पर्क में आने वाले सभी व्यक्ति हमारे शिक्षक की भूमिका का निर्वाह ही करते हैं। बच्चे की पहली गुरु उसकी माँ होती है। उसके बाद परिवार के सदस्य व समाज उसका गुरु बनते हैं। अध्यापकों अथवा शिक्षकों का स्थान तो सर्वोपरि है ही।

हर व्यक्ति की दोहरी भूमिका होती है। वह सीखता है तो सिखाता भी है। जब हम किसी को कुछ सिखा रहे होते हैं तो सीख भी रहे होते हैं। एक ही समय पर हम गुरु व शिष्य दोनों होते हैं। यदि हम सीखना अथवा ज्ञान प्राप्त करना चाहें तो हर क्षण हमें ये अवसर दे रहा होता है। जहाँ तक व्यक्तियों का प्रश्न है एक प्रश्न उठता है कि क्या हम अपने सम्पर्क में आने वाले हर व्यक्ति की हर बात मान लेते हैं? क्या अपने प्रिय व्यक्तियों की हर गलत-सही बात मान लेते हैं? कदापि नहीं। हमें जो बातें अच्छी नहीं लगतीं उन्हें मानने का सवाल ही नहीं उठता। और मानें भी क्यों? इसीलिए हम जब तक पूरी तरह से संतुष्ट नहीं हो जाते किसी की बात नहीं मानते। तो फिर किसी मठ, आश्रम अथवा डेरे में रहने वाले व्यक्ति की हर गलत-सही बात मानने का क्या औचित्य हो सकता है?

आज यदि गुरु के रूप में प्रतिष्ठित मठाधीशों का आचरण देखें तो पाते हैं कि अधिकांश का आचरण भ्रष्ट है। उनका आचरण किसी भी प्रकार से अनुकरणीय नहीं है। फिर उनकी गलत-सही सभी बातों को आँखें मूँद कर मान लेना या उन पर चलना क्या प्रदर्शित करता है? ये सिर्फ यही दर्शाता है कि हम अव्वल दर्जे के मूर्ख हैं। हम एक काल्पनिक आत्मज्ञान की खोज में भटक रहे हैं लेकिन हममें कॉमन सेंस का विकास भी नहीं हुआ है। इस संसार में दूसरों को मूर्ख

बनाकर उन्हें ठगने या लूटने वालों की कमी नहीं अतः इनसे सावधान रहना अनिवार्य है। हम अपने चारों ओर आए दिन ये तमाशा देखते रहते हैं फिर भी हम लापरवाह रहते हैं तो दोष हमारा है। हम अपनी कीमती वस्तुओं और पैसों को सुरक्षित स्थान पर नहीं रखेंगे तो चोरों की नजरों से छुपा नहीं रह सकेगा और वे मौका लगते ही उसे ले भागेंगे।

इसी प्रकार से धर्म-अध्यात्म के नाम पर मूर्ख बनाकर लूटने वालों की भी कमी नहीं लेकिन हमारी व्यावहारिक शिक्षा हमें ये बतलाती है किसी के बहकावे में मत आओ। हर कार्य पूरी तरह से सोच-विचार करके ही करो। जो बहलाता-फुसलाता है अथवा सब्जबाग दिखलाता है उससे बचकर रहो। जब हम अपने सबसे प्रिय व्यक्ति की गलत बातों का विरोध करने में संकोच नहीं करते तो आध्यात्मिक उत्थान की गारण्टी लेने वाले ठगों की अनर्गल बातों का विरोध क्यों नहीं कर सकते? चाहे कोई कितना भी सम्मान के योग्य व्यक्ति अथवा गुरु हो उसकी गलत बातों को अस्वीकार करना ही नहीं उनका विरोध करना भी अनिवार्य है। लेकिन वास्तविकता यही है कि उनकी गलत बातों का विरोध नहीं किया जाता। विरोध करना चाहें तो भी नहीं कर सकते क्योंकि उनकी आचार संहिता ही ऐसी होती है कि भक्तगण अथवा शिष्यगण उसका पालन करने के चक्कर में कुछ बोल ही नहीं पाते और जब सर से पानी उतर जाता है तो बोलने का भी कोई लाभ नहीं होता।

उस आचार संहिता का ही एक नमूना है ये दोहा जिसमें कहा गया है कि गुरु जो कहे उसको बिना तर्क-वितर्क अथवा सही-गलत का आंकलन किए स्वीकार कर लेना चाहिए। प्रायः कहा जाता है कि गुरु जो कुछ भी करता है हमारी भलाई के लिए ही करता है। ये नीति वचन भी लोगों का मुँह बन्द रखने का अच्छा तरीका है। फिर भी यदि हमारा आग्रह है कि सफेद अथवा पीले कपड़ों में लिपटा हुआ कोई लम्बी दाढ़ी वाला व्यक्ति ही ज्ञान दे सकता है अथवा गुरु हो सकता है तो मान लेते हैं लेकिन याद रखिए कि वो भी हमारे जैसा ही एक व्यक्ति है। यदि उसमें अच्छे गुण हैं तो उसे गुरु बनाने

में कोई दोष नहीं। जब गुण के आधार पर ही कोई व्यक्ति गुरु बनाया जा सकता है तो हर गुणी व्यक्ति ही गुरु होने की पात्रता रखता है इस बात को भी हमेशा ध्यान में रखना चाहिए।

गुरु में गुण होने चाहिए इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता। लेकिन गुरु ही अज्ञानी अथवा गलत हो तो? ऐसे में तो अनर्थ होने की पूरी सम्भावना है। एक लोकोक्ति प्रचलित है कि पानी छान कर पीना चाहिए और गुरु अच्छी तरह से देखभाल कर ही बनाना चाहिए। कई बार ऐसा होता है कि हम बिना देखे ही पानी का गिलास उठाकर पीने लगते हैं। यदि उसे पीते समय बीच में उसमें कोई तिनका अथवा गलत चीज आ जाती है तो ऐसे में हम मुँह के सारे पानी को एकदम बाहर फेंक देते हैं। यदि गलती से किसी गलत गुरु की शरण में चले जाएँ तो इस बात का आभास होते ही उससे किनारा कर लें व पुनः किसी योग्य गुरु की तलाश में जुट जाएँ। यदि योग्य गुरु नहीं मिलता तो अयोग्य गुरु की अपेक्षा बिना गुरु के रहना अधिक श्रेयस्कर होगा।

सीताराम गुप्ता,
ए.डी.-१०६-सी., पीतम पुरा,
दिल्ली - ११००३४
चलभाष- ९५५५६२२३२३

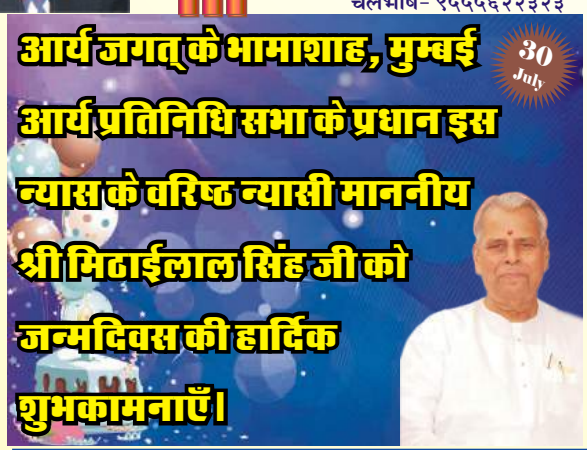

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार)
स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण"
पुरस्कार
₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

कहावत महशूर हैं वक्त से पहले और किस्मत से ज्यादा किसी को नहीं मिलता, जो जब होना होता है, वह तो तभी ही होता है, उससे पहले या बाद में कभी नहीं होता। भावी बलवती होती है। इसी को ही किस्मत कहते हैं। जिनके हक में बातें हो जाती हैं वे इस सौभाग्य कहते हैं। इंतजार करें, आप कतार में हैं। सड़कों पर दौड़ते हुए ट्रक दूसरे वाहनों से जब आगे निकलने की कोशिश करते हैं तो वाहन चालक की नजर अपने से आगे वाहन के पीछे के भाग पर पड़ जाती है, जिस पर लिखा होता है, 'रास्ता मिलने पर ही जगह दी जायेगी' बस, बिलकुल यही बात उस बात के बनने के बारे में भी कही जा सकती है जिसकी हम प्रतीक्षा कर रहे होते हैं। बात सिर्फ सब्र करने की, प्रतीक्षा करने की या फिर धीरज रखने की होती है। आदमी को अपनी तरफ से कर्म करते रहना चाहिये, परमात्मा देर सवेर अच्छा फल तो दे ही देता है। हर काम के होने का, हर बात के बनने का एक निश्चित समय होता है, जिसका केवल परमात्मा को ही पता होता है। हमें उस समय तक सब्र करना पड़ता है। अगर कोई बात हमारे मन माफिक ना हो, तो बेसब्रे तथा बेशुक्रे बन्दे की तरह परमात्मा को, परिस्थितियों को, भाग्य को या फिर उससे सम्बन्धित व्यक्तियों को कोसने नहीं लग जाना चाहिये। जब हम कोई पौधा लगाते हैं तो उसके बड़ा होने तथा फल देने में कुछ समय लग जाता है। तो जो हम कर्म करते हैं, उनके फलीभूत होने में भी तो कुछ समय लगता है, उस समय के आने का हम सब्र से, संयम से तथा धीरज से इंतजार करना कब सीखेंगे। हमारे उतावलेपन से तो बात तुरन्त होने नहीं लगेगी अन्यथा हम अनावश्यक तौर पर अपना ब्लड प्रैशर बढ़ा लेंगे, हार्ट अटैक करा लेंगे, तनावग्रस्त हो जायेंगे या फिर कोई और बीमारी को अनचाहा निमंत्रण दे बैठेंगे। जो हम चाहते हैं, वह तो जब होना है, तब होगा, इस बीच हमें कई मुसीबतें अपना शिकार जरूर बना लेंगी। अगर हमें कोई काम सूरज के निकलने पर करना है, तो सूरज के निकलने का इंतजार तो करना होगा, हमारे सब्र खोने या फिर उतावला होने पर सूरज तो निकल नहीं आयेगा। अगर किसी के यहाँ बेटा पैदा होता है तो उससे सम्बन्धित बहुत सारी आशायें भी पैदा हो जाती हैं। उनकी आशाओं के पूरा होने तक हमें सब्र करना पड़ेगा, उसकी देखभाल करनी पड़ेगी, मार्ग दर्शन करना पड़ेगा, खर्चा करना पड़ेगा तब कहीं सालों के बाद वह बेटा बड़ा होकर आशाओं की पूर्ति के काबिल हो जायेगा। किसी काम के बनाने के लिये आदमी को दिलो जान से परिश्रम करना चाहिये, अपने शुभचिन्तकों की सहायता तथा मार्गदर्शन की अपेक्षा करनी चाहिये और बाकी सब परमात्मा पर छोड़ देना चाहिये। अगर काम बन जाये तो परमात्मा का शुक्र करना चाहिये और अगर बार-बार प्रयत्न करने के बावजूद भी काम ना बने तो परमात्मा की यह मर्जी समझकर सब्र कर लेना चाहिये। सब्र के सिवा हमारे पास कोई चारा नहीं। मन को तो समझाना पड़ता है। जब कभी भी हमारे परिवार में से कोई सदस्य परमात्मा को प्यारा हो जाता है तो रो पीटकर, दहाड़े मार, सिर दीवार के साथ पटक कर आखिर हम सब्र करते हैं, अपने मन को समझाते हैं कि यह इसका कोई इलाज नहीं, यह सब तो सहना ही पड़ेगा। व्यापार, उद्योग, खेती-बाड़ी से सम्बन्धित लोगों को कई बार अपने काम धंधे में नुकसान हो जाता है, कई बार दूसरे का कर्ज उतारने की भी हिम्मत नहीं होती, लोग सब्र की यह सब सह लेते हैं तथा नये सिरे से अपना काम शुरू कर एक बार सफलता के शिखर को छू लेते हैं। कई बार बाढ़, भूचाल तथा सूखे या महामारी से भारी तबाही हो जाती है, जानमाल का नुकसान हो जाता है, लोग अर्श से फर्श पर आ जाते है, जिस तरह

'वक्त' फिल्म में बलराज साहनी का हाल हो जाता है, वैसा हो जाता है, लेकिन लोग सब्र करते हैं, इससे ईश्वर की मर्जी मान कर एक बार फिर उठ खड़े होते है। एक बार फिर वैसे ही हो जाता है, जैसे कि पहले था, संसार के अन्य देशों की तरह जापान में भी भूचाल तथा सुनामी से भारी तबाही होती है। लेकिन इस देश के लोगों के सब्र के जज्बों को सलाम करते हुये हमें विपत्ति का सामना मुस्कराते हुये करना तो उनसे ही सीखना चाहिये। सब्र किसी दुकान पर नहीं बिकता

और ना ही किसी फैक्ट्री या खेत में पैदा होता है। यह तो मन की एक अवस्था है जो हमारी सोच, दृढ़ निश्चय तथा कर्मठता पर निर्भर करता है। जिन बातों पर हमारा कन्ट्रोल नहीं, उनको लेकर तो हमें सब्र करना पड़ेगा। माना परिवार में किसी की मृत्यु हो गई है यह तो एक असहनीय क्षति है, पर इसको लेकर सब्र करना ही पड़ेगा। लेकिन काम धंधे में मंदी नुकसान हो जाय, पहले तो हमें सब्र कर सब्र सहना पड़ेगा, फिर उस काम धंधे को नये सिरे से खड़ा करने के लिये अपने आप में हिम्मत जुटानी पड़ेगी। अगर कहीं से मदद मिल जाये तो परमात्मा का शुक्र है, वरना अकेले ही हिम्मत करो। महादेव ने अकेले समुद्र मंथन के समय जहर पी लिया था तभी तो आजतक यह दुनिया सलामत है। १९६२ में चीन ने हमें इस कद्र शर्मनाक करारी हार दी कि हम अब तक उबर नहीं पाये। हम कमजोर थे, सब्र करना पड़ा। लेकिन इस बीच हम सम्भले आर्थिक स्थिति सुधारी तथा युद्ध क्षेत्र में तैयारी को सुदृढ़ बनाया, अब चीन हमें भेड़ बकरी की तरह नहीं समझ सकता। यह है सब्र का फल। सब्र हमें सिखाता है स्थिति का समयानुसार सामना करना तथा भविष्य के लिये तैयार रहना, हालात बहुत अच्छे हों, बहुत बुरे हों, अपने साथ छोड़ जायें, मित्र विश्वासघात करें, डरे नहीं, घबरायें नहीं, धीरज ना खोयें, सज्जन पुरुष ध्रुव तारे की तरह दृढ़ अवस्था धारण किये हुये सब्र का साथ नहीं छोड़ते, सब्र का पाठ पढ़ाते हुये ही तो फिल्म हमराज में सुनील दत्त ने यह कहा था 'ना मुँह छिपा के जियो, ना सिर झुका के जिओ, गमों का दौर भी आये तो मुस्करा के जियो' अगर सुख नहीं रहा तो दुःख कैसे हमेशा रहेगा। अगर चमकता हुआ सूरज शाम को छुप गया है तो अंधेरी डरावनी रात किस तरह हमेशा निराश करती रहेगी। सूरज तो सुबह फिर निकलेगा ही। जरूरत सिर्फ सब्र करने की है, 'जो जीवन से हार मानता उसकी हो गई छुट्टी, मुँह छुपा के कहे जिन्दगी, तेरी मेरी हो गई कुट्टी, 'प्रेमनाथ ने 'शोर में कहा था तो फिर सब्र का दमन थामें रखें। सब्र छूट गया तो घर गृहस्थी टूट जायेगी, दोस्ती खत्म हो जायेगी, बिजनेस ठप हो जायेगा, परमाणु युद्ध हो जायेगा, आदमी को कई बिमारियाँ लग जायेंगी। अतः हर हाल में सब्र रखकर स्थिति का हँसकर मुकाबला करने में ही भला है।

– मकान नं. ९७५, ग्रीन रोड़
रोहतक- १२४००१ (हरियाणा)

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टांक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत

ईसाई मिशनरी और भारत

ईसाईमत अभ्यासुओं, विद्वानों, मिशनरीयों तथा लेखकों के यीशु ख्रिस्त जीसस क्राइस्ट, विषयक सदियों पुराने बड़े-बड़े दावों के बावजूद, योरोप और अमेरिका के बुद्धिजीवी वर्ग ने यीशु ख्रिस्त का स्वीकार करने से इन्कार कर दिया है। आज-कल वहाँ उपन्यासों के 'कल्पित यीशु' का ही बोल-बाला है। भारतविद्याविद् डॉ. कोनराड एल्स्ट का कहना है कि पश्चिम में, विशेषकर योरोप में, ईसाईयत की लोकप्रियता और वहाँ के चर्चों में ईसाई श्रद्धालुओं की उपस्थिति निरन्तर कम होती जा रही है। वहाँ के समाज में पादरी के व्यवसाय के प्रति दिलचस्पी का अभाव भी चिन्ता का विषय बन गया है। वास्तविकता यह है कि योरोप और अमेरिका के आधुनिक लोगों की ईसाईयत में अब कोई रुचि नहीं रही है। बदले हुए परिवेश में पादरियों की भूमिकाएँ भी बदल गई हैं। भूतकाल में पश्चिम के ईसाई पादरी पूर्व के देशों में अपने मत का प्रचार-प्रसार करने आते थे, और आज भारत के पादरी पश्चिम में जा रहे हैं- ईसाई मत का प्रचार-प्रसार करने के लिए नहीं, परन्तु वहाँ की ईसाई संस्थाओं को बन्द होने से बचाने के लिए, चालू स्थिति में रखने के लिए। वहाँ के चर्चों, स्कूलों, अस्पतालों, जेलों और रिहेबिलीटेशन केन्द्रों में धार्मिक शिक्षा और काउंसेलिंग देने ले लिए पूर्व के पादरियों की भारी माँग रहती है। अमेरिका में भारतीय ननों की भी भारी माँग रहती है। ज्यादातर नन जो अमेरिका जाती हैं और वहाँ के शिकागो आदि शहरों के स्लम एरिया में कार्य करती हैं वे मदर टेरेसा के कोन्वेन्ट्स की ही होती हैं। केथोलिसिज्म भारत जैसे विकसित देशों में आज भी एक शक्तिशाली तन्त्र है, जबकि उपभोक्तावादी पश्चिम में समय के साथ-साथ उसकी ताकत कम होती जा रही है। समग्र योरोप में असंख्य भव्य चर्च आज खण्डहर बन चुके हैं। कई चर्चों का रखरखाव करने वाला आज वहाँ कोई नहीं है। कई चर्च गैर-ईसाईयों को बेचे जा चुके हैं, जिन्होंने इन चर्चों को अपने पूजा-स्थलों और व्यापार केन्द्रों में परिवर्तित कर दिए हैं।

ऐसा क्यों हुआ? कारण स्पष्ट है। योरोपियन ईसाईयों का ईसाईयत से मोहभंग हो चुका है। योरोप और अमेरिका के ज्यादातर लोग, जो ईसाईयत को छोड़ चुके हैं, वे आज महसूस कर रहे हैं कि ऐसा करके उन्होंने कुछ भी खोया नहीं है। वे जान चुके हैं कि यीशु ख्रिस्त परमेश्वर का एक-मात्र पुत्र नहीं था, न ही उसने मानवता को शाश्वत पाप से बचाया है, और इस लोक और परलोक में हमारे जीवन का सुख ईसाईयत की किसी भी मौलिक मान्यता पर निर्भर नहीं करता। वास्तव में, पश्चिमी जगत् को आज 'ईसाई पश्चिम' कहकर पुकारना ही गलत है, लेकिन ईसाई मिशन्स आज भी भारत और एशिया के अन्य देशों मे सक्रिय हैं इस तथ्य से यह निष्कर्ष निकालना गलत होगा कि पश्चिम से ईसाई मिशनों को संचालित करने वाले लोग हिन्दू, बौद्ध आदि 'धर्मविहीन लोगों' (heathens) की आत्मा को नर्क की अनन्त यातनाओं से बचाने का पवित्र कार्य कर रहे हैं। वास्तव में, एशियाई देशों में कार्यरत ये ईसाई मिशन्स पश्चिम के पोलिटिक्स और खुफिया तंत्रों के हथकण्डे मात्र हैं, जिसका प्रयोग प्रायः यहाँ की सरकारों में अनावश्यक दखल देने के लिए और यहाँ की समाज-व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करने के लिए किया जाता रहा है। भूतकाल में पश्चिम की शक्तिशाली सेनाएँ यीशु के लिए सक्रिय थीं। आजकल पश्चिम की प्रचुर सम्पत्ति के बल पर यीशु के व्यापारी (merchants of Jesus) अपना धंधा चला रहे हैं। इसलिए भारत में कार्यरत ईसाई मिशन्स के प्रचंड तंत्र में धर्म-तत्व खोजने का व्यर्थ प्रयास करने की भूल कभी नहीं करनी चाहिए।

यह दुःखद आश्चर्य की बात है कि वेद-वेदांग, इतिहास-पुराण, षड्दर्शन शास्त्र, रामायण-महाभारत,

त्रिपिटक, जैनआगम और भक्ति साहित्य की भूमि भारतवर्ष में ईसाई मिशनरीयों को बाईबल के यीशु के लिए आज भी 'बाजार' मिल रहा है। इस से भी ज्यादा विस्मय की बात यह है कि खुद हिन्दू सन्तों, बाबाओं, बापूओं, स्वामियों, कथाकारों आदि धर्मध्वजियों और सर्व-धर्म-समभाववादी सेकुलर जमातों द्वारा ईसाईयत को एक 'धर्म' के रूप में और यीशु को एक 'देवता' के रूप में स्वीकृति दी जा रही है। भारत के इस विचित्र वर्तमान परिदृश्य को लक्ष में रखकर इतिहासकार स्व. सीताराम गोयल ने अपनी पुस्तक 'Jesus Christ: An Artifice for Aggression' में लिखा है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बाईबल का अध्ययन कर यीशु की असलियत सामने रख दी थी, लेकिन दुर्भाग्य से उनके बाद आने वाले हिन्दू नेताओं ने स्वामी दयानन्द के उदाहरण का अनुसरण नहीं किया। (पृ. ८२)

तब से लेकर आज तक एक ओर तो ईसाई मिशन्स के कारनामों की कभी-कभार दबे स्वर में भत्सर्ना की जाती रही है, जबकि दूसरी ओर यीशु की प्रशंसा के पुल बाँधे जाते रहे

हैं। लेकिन यह प्रयुक्ति कारगर सिद्ध नहीं हुई है। यीशु के प्रति हिन्दुओं के इस लगाव को सीताराम गोयल जी हिन्दुओं की कमजोरी के रूप में देखते हैं। उनका कहना है कि हिन्दुओं की इस कमजोरी का भरपूर लाभ उठाकर ही राइमुन्डो पनिक्कर (The Unknown Christ of Hinduism), एम. एम. थॉमस (The Acknowledged Christ of the Indian Renaissance), के. वी. पॉल पिल्लई (India's Search for the Unknown Christ), एलिसाबेथ क्लेर प्रोफेट (The Lost Years of Christ), केथलिन हिली (Christ as Common Ground: A Study of Christianity and Hinduism) आदि ईसाई लेखक हिन्दू धर्म में यीशु को बलात् घुसेड़ने को प्रोत्साहित हुए हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि यीशु ख्रिस्त और हिन्दू धर्म के मध्य दूर-दूर का भी कोई सम्बन्ध नहीं रहा है। हिन्दू पुनर्जागरण के किसी भी पुरोधा ने यीशु को 'ख्रिस्त' (मसीहा) के रूप में स्वीकार नहीं किया था, और न ही यीशु, यदि वह वास्तव में था, ज्ञान प्राप्त करने या ज्ञान देने के लिए कभी भारत आया था। इसी तर्ज पर और इसी उद्देश्य से लिखी गई ऐसी और कई पुस्तकों का उल्लेख किया जा सकता है, जिसमें यह सिद्ध करने का व्यर्थ प्रयास किया गया है कि यीशु को ख्रिस्त (मसीहा) के रूप में स्वीकार किये बिना हिन्दू धर्म अपूर्ण है। सीताराम गोयल जी का कहना था कि जब तक हिन्दू समाज स्पष्ट रूप से यह घोषणा नहीं कर देता कि सनातन धर्म और 'एक-मात्र उद्धारक' की ठेकेदार ईसाईयत के मध्य कुछ भी समानता नहीं है तब तक बाजार में ऐसी फर्जी पुस्तकों की बाढ़ आती रहेगी। डॉ. कोनराड एल्स्ट का भी मन्तव्य है कि हिन्दुओं को, जो यीशु विषयक भावनात्मक जाल में फंस चुके हैं, यह समझ लेना चाहिए कि हिन्दू (वैदिक) धर्म का सार 'सर्व-धर्म-समभाव' नहीं है, बल्कि इसका मूल तत्व 'सत्य' है।

अतः हिन्दू समाज के लिए यह समझ लेने का समय आ गया है कि यीशु हमारे लिए आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक या नैतिक जीवन का आदर्श कभी नहीं हो सकता। इतिहास साक्षी है कि शुरुआत से ही साम्राज्यवादी आक्रमणों के लिए यीशु का एक साधन के रूप में प्रयोग किया गया है, और आज भारत के सन्दर्भ में भी यीशु साम्राज्यवादी आक्रमण के एक साधन से ज्यादा और कुछ नहीं है। इन आक्रमणकारियों के लिए यीशु रूपी यह साधन बहुत ही फायदेमन्द सिद्ध हुआ है। इसलिए हिन्दू समाज को यह वास्तविकता समझ लेनी चाहिए कि साम्राज्यवादी ताकतों का यीशु रूपी यह हथकण्डा अपने देश और संस्कृति के लिए विध्वंसकारी सिद्ध हो सकता है।

सीताराम गोयल का कहना है कि, 'The West (where he [Jesus] flourished for long) has discarded him as junk. There is no reason why Hindus should buy him. He is the type of junk that cannot be re-cycled. He can only poison the environment. अर्थात् 'पश्चिमी जगत् ने, जहाँ वह यीशु, एक लम्बे समय तक फूला-फला, उसको अब कबाड़-कचरा समझकर फेंक दिया है। इसलिए कोई कारण नहीं है कि हिन्दू समाज उस कबाड़ को खरीदें। वह ऐसा कबाड़ है जिसे रि-सायकल नहीं किया जा सकता। वह केवल वातावरण को प्रदूषित ही कर सकता है।' (Jesus Christ: An Artifice for Aggressions- 85)

- राजेश आर्य
सत्यार्थ सौरभ हैरत

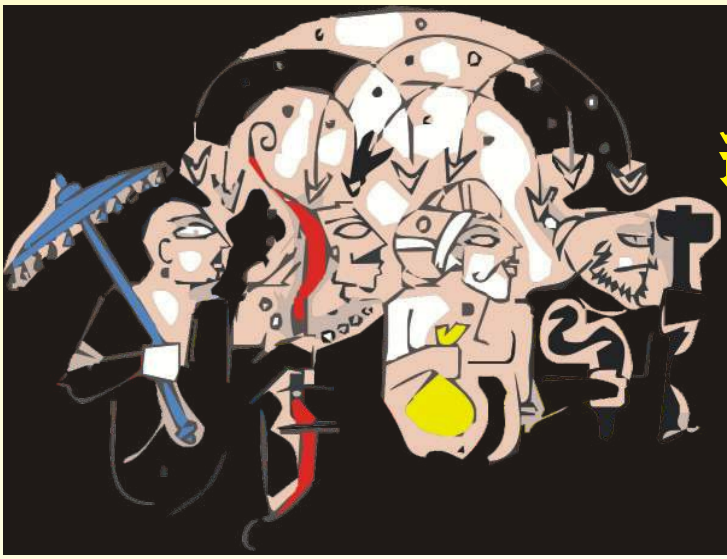

कॉरपोरेट जगत् में घुसपैठ कर चुके छद्म हिन्दू प्रचारक देवदत्त पटनायक को चुनौती।

आज दैवयोग से देवदत्त पटनायक के कार्यक्रम में जाने का संयोग बना। इच्छा तो नही थी किन्तु मेरे अनुग्रही मित्र के आदेश की अवहेलना करना उचित न था।

मुझे २००६-२०१० का समय स्मरण हो आया। जब ऋषि दयानन्द से अनुप्राणित हमारी मित्र मंडली ने इनके द्वारा प्रचार किए जा रहे मिथकवाद का भंडाफोड़ किया था। उसके बाद देवदत्त जी ने हमारी मित्र मंडली से सम्पर्क तोड़ दिया था, क्योंकि इससे इनकी, चन्द्र की भाँति बढ़ती झूठ की दुकान का अमावस्या हो जाने का भय उत्पन्न होने लगा था।

कार्यक्रम में सम्मिलित होने से पूर्व मैं निश्चय कर के बैठा था कि शान्त रहकर सुनूँगा और शास्त्र चर्चा नहीं करूँगा। कार्यक्रम कॉरपोरेट स्तर पर था और इसमें आमंत्रित अतिथि की मर्यादा का पालन आवश्यक होता है। अतः इस कारण भी शास्त्र चर्चा का अवकाश मिलने का प्रश्न नहीं था।

देवदत्त जी ने कार्यक्रम का आरम्भ ही पश्चिम से उधार लिए सिद्धान्त से किया। उनकी इस प्रवृत्ति का भान हमें पहले ही से था। किन्तु, हम मन पक्का किये बैठे रहे।

ग्रीक सभ्यता के महाकाव्य, HOMER का वचन है कि प्रत्येक बात जो कही जाती है, मनुष्य जो बोलता है वो सच हो या झूठ, वो मिथक है।

इस उक्ति का छद्म अवलंबन लेते हुए देवदत्त जी ने अपने व्याख्यान का आरम्भ करते हुए कहा कि एक सत्य होता है और एक असत्य। किन्तु एक अवस्था इसके बीच की होती है उसे मिथक कहते हैं।

आगे मिथक की व्याख्या करते हुए, महानुभाव ने कहा कि एक मेरा सच है और एक तुम्हारा सच। इस पर विवाद नहीं हो सकता।

इसकी पुष्टि में, साहब ने, अपनी सम्मोहनी वाणी का रंग बिखेरते हुए एक कुतर्क प्रस्तुत किया।

महाभाग, पटनायक जी श्रोतागण को समझाते हुए बोले कि जैसे घर में पति अनेक बार अपनी पत्नी से कहता है की मेरी माँ तुमसे अच्छा खाना बनाती है। किन्तु पत्नी का मानना है कि वो ज्यादा अच्छा खाना बनाती है। इसके आगे अपने कथन को स्पष्ट करते हुए, पटनायक जी कहते हैं कि इसमें एक पत्नी का सच है और एक पति का सच, किन्तु इस पर विवाद नहीं हो सकता। यही मिथक की परिभाषा है, क्योंकि इस में सत्य और असत्य का निर्णय नहीं हो सकता।

सभी श्रोतागण दत्तचित हो इनकी इस परिभाषा पर अभिभूत थे। लेकिन हमारे मन के चारों अवयव इस धूर्तता पर स्तब्ध थे और सोच रहे थे कि ग्रीक भाषा में उलजीवे क्रियावाची शब्द है, जिसका अर्थ बोलना या बताना होता है। बाद में ये शब्द लैटिन से होते हुए अंग्रेजी भाषा में आया, वहाँ इसका अर्थ गल्प या कल्पना माना गया।

जिस प्रकार यूरोप वालों ने MYTH की परिभाषा का सहारा लेते हुए भारत के ऐतिहासिक ग्रन्थों को, इलियाड और होमर के जैसे MYTH सिद्ध करने का प्रयास किया, उसी छद्म वृत्ति का अनुसरण करते हुए देवदत्त जी, अपने मिथ्या वाद को प्रसारित करने में लगे हैं। भारतीय वाङ्मय में 'मिथ्या' का अर्थ 'झूठ' होता है तथा 'मिथ' धातु का अर्थ 'सहकारिता और प्रत्यक्ष ज्ञान है।' किन्तु, कौन किसको समझाए।

कॉरपोरेट जगत् में आज कल motivational speakers की बाढ़ आई हुई है। इनमें कुछ थोड़ी बहुत संस्कृत सीख कर गीता मार्तण्ड बन, बड़े-बड़े उद्योगपतियों का उल्लू गांठ

रहे और कुछ तो बिना संस्कृत ज्ञान के ही भारतीय प्राचीन विद्या के ज्ञान रूपी सूर्य बन देश का भविष्य डुबो रहे हैं।

लेकिन, क्या करें?

अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा।

महाभाग देवदत्त जी, अपनी प्रवाह में बहते हुए, यूरोपियन द्वारा लिखित और उनके मानस पुत्रों द्वारा प्रचारित इतिहास बोध के साथ मिश्र, सिंधु सभ्यता आदि के ज्ञान की वर्षा करने लगे। लगे हाथ यज्ञ को भी लेन-देन की प्रक्रिया बता कर अंग्रेजी शब्द Transaction के तुल्य बता दिया।

हमारा धैर्य खत्म होने लगा और हम ने प्रश्न करने के लिए हाथ उठा दिया।

इस प्रकार के कार्यक्रमों में सांकेतिक रूप से, अन्त में सीमित प्रश्न करने की व्यवस्था होती है, किन्तु शास्त्र चर्चा का कोई प्रावधान नहीं होता। क्योंकि ऐसे कार्यक्रम किसी शास्त्र चर्चा अथवा ज्ञान वर्धन हेतु नहीं होते अपितु श्रोताओं को कुछ समय के लिए एक छद्म बौद्धिक आभा मंडल से ग्रसित करने के लिए होते हैं। इस प्रकार उनके धार्मिक बोध को न्यून कर अधार्मिक प्रवृत्तियों को सहज स्वीकार्य बना देने का प्रयास होता है।

किन्तु हम शास्त्र चर्चा का मन बना चुके थे, जिसका उचित अवसर देख हमने हाथ उठा दिया था। यदि हम किसी और मंच पर होते तो खड़े हो कर चुनौती दे देते, किन्तु यहाँ भिन्न व्यवस्था होने से केवल हाथ उठाया।

लेकिन, इस प्रकार के गुरु घंटाल ऋषि-मुनियों की भाँति शास्त्र चर्चा नहीं करते। अन्यथा हम से हमारा मंतव्य पूछ कर बाद में शास्त्र चर्चा की हामी देते। लेकिन, जिस व्यक्ति ने शास्त्र कभी पढ़े नहीं तो उसे शास्त्र परम्परा का ज्ञान कैसे सम्भव?

व्यवधान उत्पन्न करना हमारा मन्तव्य न था इस कारण हम फिर कार्यक्रम से बाहर आ गए। इससे अधिक गप्प सुनने की सामर्थ्य हम में नही थी।

देवदत्त जी की कुछ गप्पें हम यहाँ लिखते हैं, फिर उनका विश्लेषण करेंगे और अन्त में देवदत्त जी को शास्त्र चर्चा का आमंत्रण देंगे।

१. देवदत्त जी ने मिथक की जो व्याख्या की है वो हम ऊपर लिख चुके हैं।

२. यज्ञ के विषय में जो विचार देवदत्त जी के हैं वो हम ऊपर लिख चुके हैं।

२. देवदत्त जी का कहना कि अमुक सही है, अमुक गलत है। इस प्रकार की binary पश्चिम की देन है। भारतीय संस्कृति में इस प्रकार का कोई विचार नहीं है। यहाँ सब विचार स्वीकृत हैं।

३. पशुओं में केवल लेने के प्रवृत्ति होती है देने की नहीं।

अन्य और भी अनर्गल, अतार्किक बातें उन्होंने की थीं। किन्तु इतनी ही बातों के विचारने से, देवदत्त जी का शास्त्र बोध कितना है पता लग जायेगा।

पहले यज्ञ के विषय में देखते हैं। देवदत्त जी ने यज्ञ की तुलना अंग्रेजी के Transaction से कर दी। जिसका अर्थ है लेन देन। अब प्रश्न ये है कि यदि यज्ञ लेन-देन से सम्बन्धित है

तो, ऋग्वेद के पहले मंत्र में ईश्वर को सृष्टि यज्ञ का 'होता' कहा है।

अगर, देवदत्त जी के तर्क को मानें तो ईश्वर भी लेन-देन की प्रक्रिया से बँधता है। और लेन-देन की क्रिया तब सम्भव है जब कुछ प्राप्ति की इच्छा और अभाव का समुच्चय हो। इस तर्क से ईश्वर में दोनों को मानना पड़ेगा। और जब दोनों हुए तो ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक आदि भी न रहा। और जब ये सब न रहा तो सृष्टि कैसे करेगा?

इसलिए यज्ञ लेन-देन कदापि सिद्ध नहीं होता। अपितु शास्त्र के अनुसार यज्ञ का अर्थ देवपूजा दान और संगतिकरण है। यज्ञ में देने का भाव तो है किन्तु लेने का भाव कहीं नहीं है, इसीलिए अग्निहोत्र के समय स्वाहा के साथ 'इदं न मम' कहा जाता है जो दान के ही भाव की पुष्टि है न कि लेने के भाव की।

शास्त्र में यज्ञ का अर्थ करते हुए पतिव्रता स्त्री और स्त्रीव्रता पति को भी देव कहा है। देवों का सत्कार ही देव पूजा है। क्योंकि पूजा का अर्थ सत्कार अर्थात् सत्=अच्छा कार= करना, होता है। यहाँ भी देने का ही भाव उत्पन्न होता है न

कि लेने का।

यज्ञ का एक प्रकार बलिवैश्वदेव यज्ञ भी है, जिसमें पशु पक्षियों एवं तुच्छ जीवों हेतु अन्नादि का दान किया जाता था।

यहाँ भी दान की प्रबल भावना है न कि लेने की।

पशु-पक्षी भी केवल लेने की प्रवृत्ति ही नहीं रखते अपितु उनमें भी वात्सल्य आदि गुण होते हैं। इसीलिए अपने बच्चों का लालन-पालन अत्यधिक कष्ट उठाने के बाद भी अतुलनीय त्याग भावना से करते हैं। इसी से सिद्ध होता है कि पशुओं में दान की भी प्रवृत्ति होती है।

अब रहा प्रश्न 'ये तेरा सच और मेरा सच' और उसके सन्दर्भ में उद्धृत प्रमाण का, तो इससे देवदत्त जी का कुतर्क ही सिद्ध होता है। अगर देवदत्त जी ने शास्त्र पढ़े होते तो यज्ञ के सत्य अर्थ से परिचित होते और तब पता लगता कि गृहस्थ आश्रम संगतिकरण के सिद्धान्त पर आधारित है। जहाँ सहकारिता का भाव और धर्मानुकूल आचरण आवश्यक है। यदि पति और पत्नी इन्द्रियों के वशीभूत आचरण करेंगे तो सहकारिता का अभाव होगा तथा जीवन नर्क बन कर रह जायेगा। इस लिए प्रश्न, भोजन के खाने योग्य का है न कि जिह्व के स्वाद का। क्योंकि हो सकता है जो ज्यादा तीखा खाता है उसको सादा खाना अच्छा न लगे। इससे व्यक्ति के इन्द्रिय जनित दुर्बलता का पता लगता है। और इसके साथ ही पता लगता है कि व्यक्ति भोजन के विषय में सम्यक् आचरण नहीं रखता, जिससे वो पत्नी के प्रति इन्द्रियों के वशीभूत, धर्म विरुद्ध आचरण करता हुआ असत्य का पालन करता है। क्योंकि वृत्ति भोजन की खाद्य योग्यता की होना चाहिए न कि स्वाद की।

अन्त में, सही और गलत की binary पश्चिम से उपजे सिद्धान्त होने का तो, इस विषय के अवलोकन से स्पष्ट है की पटनायक साहेब, देश में अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव से उत्पन्न हुए छद्म हिन्दु कॉरपोरेट प्रचारक की जमात के हैं। अन्यथा उन्हें पता होता कि पश्चिम का सिद्धान्त दो स्तम्भों पर टिका है।-

१. बिना कार्य-कारण प्रभाव के, ये एक सीमित अवधि का जीवन और उसके बाद की अनन्त काल का heaven और hell अथवा जन्नत और दोजख मानता है।
२. विकासवाद, जिसमें आरम्भ और अन्त दोनों केवल विभिन्न गणितीय सम्भावनाओं पर है। किन्तु इन सम्भावनाओं के हेतु अनिश्चित और अप्रमाणित हैं।

इसके विपरीत भारतीय वैदिक सिद्धान्त कर्मफल की प्रामाणिक तार्किकता और कार्य-कारण सम्बन्ध पर टिका है। कर्म फलानुसार आत्मा को कर्मों का फल भोगना ही है और कर्म का अभाव कभी नहीं होता।

कार्य कारण का सिद्धान्त, प्रत्येक कार्य का कारण और उसका कर्त्ता मानता है। किन्तु मूल कारण का कोई कारण नहीं होता तथा सृष्टि प्रवाह से अनादि है, इसका भी उद्घोष वैदिक सिद्धान्त ही करता है।

अन्त में सत्य की परीक्षा पाँच प्रकार से होती है।

१. ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव और वेद विद्या
१. वैदिक दर्शन में कथित प्रत्यक्षादि आठ प्रमाण।
२. सृष्टि क्रम।
३. आप्तों का व्यवहार।
४. आत्मा की पवित्रता

इनसे जो प्रमाणित नहीं होता वो असत्य है। अतः सत्य और असत्य से इतर, और कुछ सम्भव नहीं। वैदिक आश्रम व्यवस्था और कर्म फल का सिद्धान्त इसी तथ्य का अनुसरण करता है।

ऊपर हमने, संक्षेप में देवदत्त पटनायक जी की धूर्तता को प्रणाम पूर्वक उद्घाटित किया है।

यदि देवदत्त पटनायक जी को हमारी विवेचना से कोई आपत्ति है तो, शास्त्र चर्चा के लिए सार्वजनिक मंच पर आमंत्रित हैं। विषय, स्थान और पंच का निर्धारण सहमति मिलने पर।

- राज वीर आर्य,
स्टेशन रोड, आर्य समाज, मुरादाबाद

गर्मी में रहेंगे बिल्कुल स्वस्थ बस ध्यान रखें ये बातें

स्वास्थ्य

गर्मी का मौसम और कड़क धूप ने सभी का हाल बेहाल कर दिया है। लगातार पारा ऊपर चढ़ रहा है। मौसम बदलता है, तो अपने साथ कई बीमारियाँ भी लाता है। गर्मी में भी त्वचा, आँखों, पेट सम्बन्धित परेशानियाँ काफी बढ़ जाती हैं। दिन में चिलचिलाती धूप में घूमने-फिरने से हीट स्ट्रोक यानी लू लगने, डिहाइड्रेशन, सिरदर्द, स्किन टैन जैसी समस्याएँ होती हैं। ऑफिस, स्कूल या फिर किसी जरूरी काम से हर किसी को घर से बाहर भी जाना है। ऐसे में जरा सी भी लापरवाही बरती, तो बीमार पड़ सकते हैं। चाहते हैं गर्मी में भी फिट और हेल्दी बने रहना, तो यहाँ बताए गए आसान तरीकों और टिप्स (How to Stay Healthy in Summer) का जरूर अनुसरण करें।

गर्मी में स्वस्थ रहने के आसान उपाय

पिएँ खूब पानी

गर्मी में शरीर से अधिक पसीना निकलता है। ऐसे में पानी की कमी होने से आप डिहाइड्रेशन के शिकार हो सकते हैं। डिहाइड्रेशन होने से आपको चक्कर, थकान, सिरदर्द जैसी समस्या हो सकती है। जरूरी है कि आप दिन भर पानी पिएँ। तरल पदार्थों का सेवन बराबर करते रहें। इसमें नारियल पानी, नींबू पानी, छाछ, लस्सी, जूस का सेवन करें। ये सभी लिक्विड शरीर में पानी की कमी नहीं होने देंगे और आपको मिलेगी भरपूर ऊर्जा।

अधिक तेल-मसालेदार भोजन ना करें

गर्मी में सबसे जरूरी है हेल्दी, न्यूट्रिशन और सादा घर का बना भोजन करना। अधिक तेल-मसाले वाली चीजों के सेवन से हाजमा खराब हो सकता है। इस मौसम में मिलने वाली हरी सब्जियों, फलों का सेवन जरूर करें। खरबूजा, तरबूज, ककड़ी, खीरा, आम आदि का सेवन जरूर करें। भोजन में हल्का तेल, मसाला डालें। लू, डिहाइड्रेशन से बचने के लिए आम पन्ना, सत्तू, बेल का शरबत, छाछ, लस्सी जरूर पिएँ।

प्रतिदिन करें एक्सरसाइज

कुछ लोग गर्मी से बचने के लिए एक्सरसाइज करना छोड़ देते हैं। ऐसा ना करें। सुबह के समय जब ठण्डी हवाएँ बहती हैं, तो पार्क, गार्डन या फिर छत पर जाकर योग, मेडिटेशन जरूर करें। हल्के एक्सरसाइज करें ताकि शरीर में एनर्जी लेवल बनी रहे। कई बार गर्मी में सुस्ती सी महसूस होती है। एक्सरसाइज करेंगे, तो आलस, थकान, लो एनर्जी लेवल दूर होगी। तेज धूप में वॉकिंग, जॉगिंग, साइकलिंग करने से बचें।

बाहर से आते ही ना पिएँ ठण्डा पानी

कुछ लोग बाहर से आते ही फ्रिज में रखा बॉटल का पानी पी जाते हैं। इससे आपको सर्द-गर्म लग सकता है। गला खराब, सर्दी-जुकाम होने की सबसे बड़ी वजह है धूप से आकर ठण्डा पानी का सेवन करना। पहले एक गिलास सादा पानी पिएँ, बाद में एनर्जी ड्रिंक, जूस, छाछ, नारियल पानी पी सकते हैं।

कपड़े जरूर बदलें

धूप में घूमने से कपड़ों में पसीना लग जाता है। घर आकर कपड़ा जरूर बदलें। पसीना लगा कपड़ा पहने रहने से त्वचा पर बैक्टीरिया पनपते हैं, जिससे स्किन सम्बन्धित समस्याएँ जैसे घमौरी, फोड़े-फुंसी, रैशेज हो सकती हैं।

- डॉ. स्वास्तिक जैन
प्रभारी चिकित्सा अधिकारी, आयुर्वेदिक और यूनानी सेवाएँ
उत्तराखण्ड सरकार, जनपद हरिद्वार

गुरु जी आपका गुरु कौन था?

कथा सरित

महान् सूफी गुरु हसन मृत्यु शय्या पर थे। उनके एक शिष्य ने उनसे पूछाः
'गुरु जी, आपका गुरु कौन था?'
हसन ने उत्तर दियाः 'मेरे हजारों गुरु थे। उनके नाम बताने में ही महीनों, शायद बरसों लग जाएँगे। मगर मैं उनमें से तीन के बारे में तुम्हें बताऊँगाः'
पहला एक चोर था। एक दिन मैं एक रेगिस्तान में भटक गया, और आखिर में जब मैं एक गाँव में पहुँचा तो, बहुत देर हो चुकी थी और सब कुछ बंद हो चुका था। आखिरकार, मुझे एक आदमी मिला तो एक मकान की दीवार में सेंध लगाने की कोशिश कर रहा था। मैंने उससे पूछा कि रात गुजारने को कोई जगह होगी क्या?उसने कहा कि इतनी रात में तो ऐसी जगह मिलनी मुश्किल है।
'मगर तुम्हें एक चोर के साथ रहने में कोई परेशानी न हो, तो तुम मेरे यहाँ आ सकते हो,' उसने कहा।
मैं उसके साथ पूरा एक महीना रहा। हर रात वह काम पर जाता। जाते समय वह कहताः 'दुआ करो, ध्यान लगाओ!'
जब वह लौटता तो मैं पूछताः
'कुछ मिला?' 'नहीं, आज तो कुछ नहीं मिला! मगर कल मैं फिर कोशिश करूँगा, और खुदा ने चाहा तो.....'
वह कभी निराश नहीं होता था, वह हमेशा सुखी, खुश और विश्वास से भरा होता था।
तब से, मैंने ध्यान लगाने में बरसों बिता दिए मगर कभी कुछ नहीं हुआ, न खुदा का दीदार हुआ और न कोई असाधारण घटना ही हुई। अक्सर, बहुत हताश होने पर, सब कुछ छोड़ देने का मन होने पर मैं उस चोर को याद करता जो हर रात मुझसे कहता थाः 'खुदा ने चाहा तो, क्या पता कल हो जाए।'

मेरा दूसरा गुरु एक कुत्ता था।
एक दिन मैं प्यासा था और एक नदी पर गया। तभी एक कुत्ता भी वहाँ आ गया। वह भी प्यासा था। वह पानी की तरफ झुका तो उसे एक कुत्ता उसे घूरता दिखा। यह उसका ही अक्स था। मगर वह डर गया; वह भौंकता हुआ वहाँ से भाग गया। फिर भी, वह इतना प्यासा था कि उसे बार-बार लौटकर वहाँ आना पड़ा। आखिर में अपने डर के बावजूद वह नदी में कूद पड़ा। इस तरह वह दूसरा कुत्ता गायब हो गया। जहाँ तक मेरी बात है तो, मुझे इसमें ईश्वर का एक चित्र दिखाई दियाः चाहे तुम भयभीत ही क्यों न हो, तो भी तुम्हें कूदना है।
तीसरा गुरु एक बच्चा था। मैं एक कस्बे से होकर जा रहा था कि मैंने एक लड़के को एक जलती मोमबत्ती पकड़े देखा। वह इसे मस्जिद ले जा रहा था। मैंने मजाक में उससे पूछाः
'क्या तुमने यह मोमबत्ती खुद जलाई?'
'जी हाँ', उसने जवाब दिया।
मैंने फिर पूछाः 'पहले, मोमबत्ती जली नहीं थी, और बाद में मोमबत्ती जल गई। तो यह रोशनी कहाँ से आई?'
तब वह लड़का हँसा, उसने मोमबत्ती बुझा दी और कहाः 'और अब आपने रोशनी को जाते देखा। वह कहाँ गई? क्या आप मुझे बता सकते हैं?'
मैं हिल गया। उस पल मैंने जाना कि मैं कितना मूर्ख था, मैं जो यह समझता था कि मैं विद्वान् हूँ और मेरे पास कितना ज्ञान है, वह सब अनिश्चित था। उसके बाद से मैंने बड़ा ज्ञानी होने का दिखावा नहीं किया। मेरा कोई एक गुरु नहीं रहा, मगर मैं एक शिष्य था, हसन ने अपनी बात खत्म करते हुए कहा। 'जीवन मेरा गुरु था क्योंकि उसने जो कुछ भी मुझे दिया उससे मैंने कुछ न कुछ सीखा।'

साभार- देश-विदेश की बोध कथाएँ

समाचार

प्रो. रासासिंह अतिथि कक्ष का लोकार्पण

दिनांक २६ मई २०२२ को अजमेर में स्थित अनाथ एवं निराश्रित बालक-बालिकाओं का पालन पोषण करने वाली राजस्थान की सबसे बड़ी एवं पुरानी स्वयंसेवी संस्था दयानन्द बाल सदन में यहाँ के पूर्व मेधावी आवासी एवं यशस्वी प्रधान, आर्य सांसद प्रो. रासासिंह जी की चिर स्मृति में दयानन्द बाल सदन, अजमेर में 'प्रो. रासासिंह अतिथि कक्ष' का लोकार्पण दयानन्द बाल सदन की पूर्व प्रबन्ध समिति के निर्णयानुसार मंगलवार दिनांक १० मई २०२२ को माननीय जिलाधीश

एवं जिला मजिस्ट्रेट, अजमेर श्री अंशदीप द्वारा किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता महेन्द्र सिंह जी रलावता, सचिव, प्रदेश कांग्रेस कमेटी, राजस्थान ने की। आचार्य अमरसिंह जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में देव यज्ञ सम्पन्न हुआ। उसके बाद कार्यक्रम के मुख्य अतिथि व अध्यक्ष का पदाधिकारियों द्वारा माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। अतिथियों के द्वारा निरीक्षण के पश्चात् माननीय जिलाधीश महोदय तथा अध्यक्ष महोदय द्वारा संस्था के बालगृह में बने प्रो. रासासिंह अतिथि कक्ष का लोकार्पण किया गया।

कार्यक्रम के दौरान सभी उपस्थित महानुभावों ने संस्था के पूर्व प्रधान प्रो. रासासिंह से सम्बन्धित अपनी अपनी स्मृतियाँ व्यक्त की। माननीय जिलाधीश महोदय द्वारा संस्था के भामाशाह श्री प्रेमप्रकाश जी खण्डेलवाल का सप्तनीक संस्था में दी जा रही उनकी सेवाओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उनका सम्मान किया।

कार्यक्रम के अन्त में संस्था प्रधान श्री ओम प्रकाश वर्मा ने सभी उपस्थित महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

आनन्द पर्वत क्लस्टर कॉलोनी में सामूहिक यज्ञ

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मार्गदर्शन में यज्ञ उत्थान मानव कल्याण समिति द्वारा 'घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ' प्रकल्प द्वारा आनन्द पर्वत क्लस्टर कॉलोनी में सामूहिक यज्ञ का कार्यक्रम रखा गया। जिसमें

गुजराती बस्ती के लोगों ने एक साथ मिलकर यज्ञ किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य जी रहे। उन्होंने कॉलोनी के समिति के लोगों को पीतवस्त्र पहनाके यज्ञ के इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए धन्यवाद दिया। विशेष आमंत्रित के रूप में प्रसिद्ध समाजसेवी श्री प्रेम अरोड़ा जी ने कॉलोनी के लोगों के सम्मुख यह बातें कही कि आप में से किसी भी परिवार का बच्चा जो अच्छा पढ़ने वाला है उसकी पढ़ाई का सारा खर्चा वह देंगे, पर आप सब को यज्ञ के इस कार्य को घर-घर पहुँचाना है।

यज्ञ के उपरान्त आर्य समाज की सेवा इकाई सहयोग द्वारा इस शिविर में सभी को भेंट स्वरूप वस्त्रादि प्रदान किए गए। और मीठा शर्बत और समोसों का प्रसाद की व्यवस्था समाजसेवी प्रेम अरोड़ा जी की ओर से की गई।

वैदिक परम्परा से भारत विश्व गुरु बनेगा

महर्षि दयानन्द सरस्वती सेवा समिति के पाँच दिवसीय व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण शिविर के समापन समारोह में मुख्य अतिथि कोटा दक्षिण विधायक संदीप शर्मा रहे। जिन्होंने कहा कि परम्पराओं के पालन से ही भारत विश्व गुरु बनेगा। उन्होंने कहा संस्कार ही उज्जवल व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं संस्कारों से ही व्यक्ति की विशिष्टता झलकती है। मुख्य वक्ता आचार्य शोभाराम ने कहा कि ऐसे शिविर ही बच्चों को संस्कारवान बनाते हैं। बच्चों को संस्कारित एवं चरित्रवान बनाने की जिम्मेदारी हम सभी की है। अध्यक्षता समाजसेवी ईश्वर लाल सैनी ने की। इस अवसर पर कोटा संभाग के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा, आर्य समाज अंजलि बिहार के राजेन्द्र मुनि आर्य, कुन्हाड़ी आर्य समाज के प्रधान पीसी मित्तल, सरोज मित्तल लालचन्द आदि मौजूद रहे।

वैदिक विद्या केन्द्र का शिलान्यास

बीते दिनों आर्य समाज चेन्नई के सहयोग से पोंडीचेरी में बनने वाले

वैदिक विद्या केन्द्र का शिलान्यास किया गया। लगभग पाँच एकड़ में बन रहे इस केन्द्र में १५० बच्चों के और १२५ वयस्कों के रहने की व्यस्था होगी। जहाँ वे वेद और अन्य आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन कर सकेंगे। आपको बता दें की पोंडीचेरी में ये अपने प्रकार का पहला संस्थान है जो वेद विद्या के प्रचार-प्रसार के लिया कार्य करेगा। इस संस्थान का शिलान्यास सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर पाणिनि महाविद्यालय रेवली से आचार्य प्रदीप जी और आर्य समाज चेन्नई के अधिकारीगण विशेष रूप से उपस्थित रहे।

भजनोपदेशक श्री जय प्रकाश शर्मा का निधन

भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के माननीय सदस्य और आर्य जगत् के प्रख्यात भजनोपदेशक श्री जय प्रकाश शर्मा, बाजपुर का ८० वर्ष की आयु में दिनांक २६ मई २०२२ को देहान्त हो गया। आपका जाना आर्य जगत् की महती क्षति है, इसमें कोई सन्देह नहीं। परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं शान्ति के लिए प्रार्थना करते हुए परमपिता परमेश्वर के श्री चरणों में निवेदन है कि जय प्रकाश जी के परिवारीजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

- भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव का शहीदी दिवस मनाया

आर्य समाज, अंजली विहार, बारां रोड, कोटा के सभागार में शहीदे आजम भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव का शहीदी दिवस उत्साह पूर्वक मनाया गया।

यज्ञोपरान्त बालिका अध्वरा आर्या ने भगतसिंह का प्रिय गीत 'रंग दे बसंती चोला' प्रस्तुत करके श्रोताओं में जोश भर दिया। समाज की कोषाध्यक्ष श्रीमती पूनम आर्या ने 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।' सुनाकर सभी को भाव-विभोर कर दिया।

संरक्षक आदरणीय राजेन्द्र मुनि जी ने अमर शहीद भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव तीनों के जीवन की प्रेरणास्पद घटनाएँ सुनाई ।

प्रधाना श्रीमती ऊषा आर्या ने शहीदों की जयकार के नारे लगवाए व शान्ति पाठ कर सभा समाप्त हुई।

नहीं रहे श्री विद्यावाचस्पति

श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति राजस्थान आर्य जगत् की एक विशिष्ट विभूति थे। उनके निधन के समाचार से अत्यन्त दुःख की अनुभूति हुई। श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति ने आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान में मंत्री पद पर रहते हुए अपना विशेष योगदान दिया था। वे एक सच्चे आर्य थे, कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तित्व के धनी थे। आर्य समाज कृष्णपाल बाजार जयपुर में प्रधान पद को सुशोभित कर कई रचनात्मक कार्य आपने किए। आर्य जगत् ने आज अपना एक सच्चा साथी खो दिया जिसकी भरपाई नहीं हो सकती। हम अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं और परिवारजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना परमपिता परमात्मा से करते हैं।

- श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर

दयानन्द पैराडाईज विद्यालय में योग दिवस मनाया गया 'करो योग रहो निरोग'

शहर की अरावली शृंखलाओं के मध्य स्थित 'दयानन्द पैराडाईज विद्यालय' में विश्व योग दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। इस मौके पर विद्यालय में विविध प्रकार के कार्यक्रम किये गये। विद्यालय के योग शिक्षक कैलाश आर्य एवं उत्तम आर्य द्वारा सूक्ष्म व्यायाम, आसन, प्राणायाम, ध्यान करवाया गया। जिसके अन्तर्गत सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, शीर्षासन, भुजंगासन, ताड़ासन, मकरासन, हलासन, पद्मासन, ध्यानमुद्रा, कपालभाति, भस्त्रिका, भ्रामरी, अनुलोम-विलोम, उद्गीथ इत्यादि का प्रशिक्षण सभी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को दिया

गया। जिसमें विद्यार्थियों व शिक्षकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

योगशिक्षक द्वारा विद्यार्थियों के जीवन में 'योग का महत्व' समझाया गया। कार्यक्रम के उपरान्त विद्यार्थियों ने प्रतिदिन १०-१५ मिनट योग व प्राणयाम करने का संकल्प लिया।

इस मौके पर विद्यालय प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष, मोतीलाल आर्य ने कार्यक्रम की सफलता पर शुभकामनाएँ प्रेषित की।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०२/२२ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०२/२२ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री रतन लाल राजौरा; निम्बाहेड़ा (राज.), श्री पुरूषोत्तम मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्रीमती सुनिता सोनी; बिकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी सोनी; बिकानेर (राज.), श्री प्रधान जी आर्यसमाज; बिकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बिकानेर (राज.), श्रीमती महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री इन्द्रजीत् देव; यमुनानगर (हरियाणा), श्रीमती कंचन देवी; बीकानेर (राज.), डॉ. राजबाला कादियाल; करनाल (हरि.), श्री फूलचन्द यादव; गाजियाबाद (उ. प्र.), श्री आर.सी. आर्य; कोटा (राज.), श्रीमती कवल कान्ता सहगल; पंचकूला (हरि.), श्रीमती संतोष चावला; गाजीपुर (दिल्ली)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ 18 पर अवश्य पढ़ें।

ईश्वर और ईश्वरकृत पुस्तक (कसौटी)

वेद ईश्वरीय ज्ञान है

शास्त्रयोनित्वात्। - वेदान्त दर्शन १/१/३

अनेक विद्याओं से युक्त प्रदीपवत् सब अर्थों का प्रकाश करने वाला सर्वज्ञ शास्त्र का कारण ब्रह्म है। ऐसे सर्वज्ञ गुणों से युक्त शास्त्र को परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं बना सकता। - शंकराचार्य

(स) 'और कहो कि क्षमा माँगते हैं, हम क्षमा करेंगे तुम्हारे और अधिक भलाई करने वालों के।'

- म.१/सि.१/सू.२/आ.५८

नोट- अष्टादश पुराणों में भी उक्त प्रकार की ही असम्भव, सृष्टिक्रम के विरुद्ध, ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव से विपरीत, चमत्कारपूर्ण बातें तथा पाप-क्षमा के नुस्खे भरे पड़े हैं पर उन्हें ईश्वरोक्त नहीं कहा जाता अतः यहाँ उनके उदाहरण नहीं दिये गये हैं।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में ईश्वरीय ज्ञान की द्योतक जिन कसौटियों का वर्णन किया है उन पर परखकर यह स्पष्ट सामने आया है कि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है कुरान तथा बाइबल आदि ग्रन्थ नहीं।

ईश्वरीय ज्ञान के सन्दर्भ में उपरोक्त के अतिरिक्त भी कुछ और महत्वपूर्ण तथ्य ध्यान देने योग्य हैं।

(क) ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ में दिया जाता है- हमने ऊपर यह सिद्ध किया था कि मनुष्य के लिए ईश्वरीय ज्ञान अत्यावश्यक है। इसके बिना उसका कार्य कदापि नहीं चल सकता। जब ऐसा हैं तो आदि सृष्टि की प्रथम मानव पीढ़ी को भी ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता है। तब ईश्वर का न्याय यही है कि किसी भी मानव को अपने ज्ञान से वंचित न रखें। अतः ईश्वरीय ज्ञान का मानव के उद्भव के साथ ही दिया जाना सिद्ध है।

प्रसिद्ध पाश्चात्य संस्कृतज्ञ प्रो. मैक्समूलर ने भी इस बात को स्वीकार किया- 'यदि धरती और आकाश का रचयिता कोई ईश्वर है तो उसके लिए यह अन्यायपूर्ण होगा कि वह मूसा से पूर्व उत्पन्न अपने करोड़ों पुत्रों को अपने ज्ञान से वंचित रखे। तर्क और धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन दोनों घोषित करते हैं कि परमेश्वर अपना ज्ञान सृष्टि के आदि में सब मनुष्यों के कल्याणार्थ प्रदान करता है।'

महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में लिखते हैं- 'प्रथम सृष्टि की आदि में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा इन ऋषियों के आत्मा में एक-एक वेद का प्रकाश किया।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है

निजशक्त्यभिव्यक्तेः स्वतः प्रामाण्यम्। - सा. द. ५/५१

वेद परमात्मा की अपनी शक्ति से प्रकट हुआ है, अतः स्वतः प्रमाण है, उसमें कोई त्रुटि नहीं।

उन्हीं ऋषियों के आत्मा में क्यों प्रकाश किया? के उत्तर में वे लिखते हैं कि 'वे ही चार सब जीवों से अधिक पवित्रात्मा थे। अन्य उनके सदृश नहीं थे। इसलिए पवित्र विद्या का प्रकाश उन्हीं में किया।

(ख) ईश्वरीय ज्ञान में लौकिक इतिहास नहीं हो सकता- जैसाकि ऊपर कहा ईश्वरीय ज्ञान का प्रादुर्भाव प्रथम मानव पीढ़ी के साथ होता है अतः उसमें मानवीय इतिहास होने का प्रश्न ही नहीं क्योंकि इतिहास तो तब तक सृजित ही नहीं हुआ। अतः जिन ग्रन्थों में लौकिक इतिहास है यह इस बात का प्रमाण है कि इनका प्रणयन इनमें उपस्थित इतिहास के काल के पश्चात् ही हुआ है और वे आदि सृष्टि में प्रणीत नहीं हो सकते। अतएव लौकिक इतिहास से युक्त ग्रन्थ ईश्वरीय ज्ञान कदापि नहीं हो सकते। वेद के अतिरिक्त प्रत्येक ग्रन्थ में लौकिक इतिहास, लौकिक भूगोल पाया जाता है अतः वे ईश्वरोक्त नहीं हो सकते। उदाहरणार्थ-

(१) 'और बाबुल के राजा नबूखुदनजर के राज्य के उन्नीसवें बरस के पाँचवे मास सातवीं तिथि में बाबुल के राजा का एक सेवक नबूसर अद्दान जो निज सेना का प्रधान अध्यक्ष था यरूसलम में आया और उसने परमेश्वर का मन्दिर और राजा का भवन और यरूसलम के सारे घर और हर एक बड़े घर को जला दिया।' - तौ.रा.प.२५/आ.८-१०

(२) 'जब युसुफ ने अपने बाप से कहा कि ऐ बाप मेरे! मैंने एक स्वप्न में देखा। - म.३/सि.१२/सू.१२/आ.४-५१

ऊपर तो हमने संकेत रूप में उदाहरण दिये हैं अन्यथा दोनों ग्रन्थ लौकिक इतिहास से भरे पड़े हैं।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाब बाग

Festive Greetings
Dollar
Missy
CHIC CASUALS
CHURIDAR | ANKLE LENGTH | CAPRI
CARRY ON MISSY
CAPRI
CHURIDAR
ANKLE LENGTH
| www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 July-2022 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

(राजा) विशेष इसपर ध्यान रक्खे कि स्त्री, बालक, वृद्ध और आतुर तथा शोकयुक्त पुरुषों पर शस्त्र कभी न चलावे। उनके लड़के-बालों को अपने सन्तानवत् पाले और स्त्रियों को भी पाले। उनको अपनी बहिन और कन्या के समान समझे, कभी विषयासक्ति की दृष्टि से भी न देखे।

- सत्यार्थ प्रकाश, षष्ठ समुल्लास पृष्ठ १५१

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर